# ऋतम्भरा

2021–22

## मुलतानीमल मोदी कॉलेज
## मोदीनगर

# ऋतम्भरा

वर्ष : 2021-2022 अंक : 65

विक्रम संवत् 2079 शक संवत 1944 हिजरी 1443

डॉ. डी. के. मोदी
अध्यक्ष
प्रबन्ध समिति

डॉ. पी.के. गर्ग
प्राचार्य एवं संरक्षक

## सम्पादक मण्डल

| | | |
|---|---|---|
| डॉ. पी.के. गर्ग | – | संरक्षक |
| डॉ. विवेकशील | – | प्रधान सम्पादक |
| डॉ. प्राची अग्रवाल | – | उप सम्पादक |
| डॉ. नीतू सिंह | – | सदस्य |
| डॉ. कोमल गुप्ता | – | सदस्य |
| कु. मोना नागपाल | – | सदस्य |
| श्री अरूण कुमार सिंह | – | सदस्य |
| डॉ. गीतांजलि शर्मा | – | सदस्य |
| डॉ. ऋचा यादव | – | सदस्य |
| सोनू | – | छात्र सदस्य |
| तरूण शर्मा | – | छात्र सदस्य |
| श्री सुनील कुमार | – | कार्यालय सदस्य |

**मुलतानीमल मोदी कॉलेज**
**मोदी नगर-201204 (उ.प्र.)**
वेबसाईट : www.mmcmodinagar.ac.in
ई-मेल : info@mmcmodinagar.ac.in

# सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

युवा एवं प्रगतिशील नेतृत्व की प्रतिमूर्ति

# प्रो. (डॉ०) देवेन्द्र कुमार मोदी

(अध्यक्ष, महाविद्यालय प्रबन्ध समिति)

एवम्

नेपथ्य में महाविद्यालय की अभिप्रेरणा

डॉ. के. एन. मोदी एवं पूज्य माँ जी गिन्नी मोदी

**Prof. (Dr.) Devendra K. Modi**
B.Tech. (Chem. Engg.) M.A. (Eco.),
M.B.A., Ph. D., D.Lit

# Message

It is a matter of immense pleasure for me to know that the latest edition of our College Magazine 'Ritambhara' is soon going to be published. the college Magazine reflects the level of education in our institution: education which is a true asset in a person's life. This asset does not only work for his own welfare; the entire nation and society benefits from it. The best national resource in today's world is human capital. Education not only motivates him in probing better opportunities for himself, but also for the nation.

I praise the commendable efforts of the Editonal team for the publication of the current issue.

With best wishes and heartiest blessing.

**Prof. (Dr.) D. K. Modi**
President

16, Community Center, New Friends Colony, New Delh-110 025
Ph.: 26323264 / 41034516 E-mail : modieducation@gmail.com

**Professor Sangeeta Shukla**
***D.SC.***
***Vice-Chancellor***

CHAUDHARY CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT-250 004 (U.P.)

**Professor Sangeeta Shukla**
*D.Sc.*
*Vice-Chancellor*

*Ref.No. SVC/21/380*
*Dated : 24-05-2022*

# MESSAGE

It is heartening to know that Multanimal Modi College, Modinagar is bringing out its annual magazine **"RITAMBHARA"**. College magazine provides an opportunity to the students to express their views on issues of contemporary relevance.

The annual magazine of the college presents a detailed account of the different co-curricular & extracurricular activities of the college, motivates and inspires students to get involved in activities crucial to the development of their personality.

It is a commendable effort aimed at harnessing creative skill of the students and its is hoped that they stand to benefit out of it. I also wish **"RITAMBHARA"** goes a long way in accomplishing the goal of value education.

I convey my good wishes and felicitations to the Principle, members of faculty and students for bringing out this publication.

(Sangeeta Shukla)

V.C. LODGE, UNIVERSITY CAMPUS,
MEERUT-250 004

Office: +91-0121-2760554, 2760551,
Fax: 2762838
Camp Office: +91-0121-2600066,
Fax: 2760577

Web: ccsuniversity.ac.in
E-mail: vc@ccsuniversity.ac.in

महाविद्यालय के कर्मठ एवं दूरदर्शी प्राचार्य

# डॉ0 प्रदीप कुमार गर्ग

## *Message from Principal*

*Good education helps us in understanding many prospects of life, such as enrichment of the personal advancement, increased Social status and social health. It also helps us to progress economically, in setting goals in life and in enhancing our awareness towards prevailing social issues. The modern education system has removed all the complexities with the introduction of distant learning programmes and is fully competent to evacuate the prevailing social issues of discrimination done among people on the basis of caste, race, religion and creed.*

*Education evolves an individual's mind which triggers his acumen, giving him a sense in working towards the betterment of the society. An educated man is not only a good learner but also understands every facet of life. It also provides the ability to understand all human rights, social rights, duties and responsibilities towards the nation. It transforms the speculations by bringing in the positivities and kicking off the negativities. I sincerely believe that our students will imbibe these positivities and will make this world a better place to live in.*

*I would also like to congratulate my entire editorial team- Dr. Vivek Sheel, Dr. Prachi Agarwal, Dr. Neetu Singh, Dr. Komal Gupta, Miss Mona Napal, Mr. Arun Kumar singh, Dr. Geetanjali Sharma and Dr. Richa Yadav for their sincere efforts in bringing out this publication.*

***(Dr. Pradeep Kumar Garg)***
*Principal*

# महाविद्यालय के गौरव

**Vishal**
Cleared UGC Net
Examination 2021 with JRF in
first attempt 1st in District and A
Rank holder of University
M.A. History, Department of History

**Ritika Chaudhary**
Qualified CSIR-UGC
NET JRF (LIfe Science)
M.Sc. BioTech
Rank 138

**Vasu Sangwan**
Gun Shooting
AIU Participation 2021
Chandigarh

**Sakshi Singh**
Judo
Inter Collegiate 2021
B.P.E.S.–I

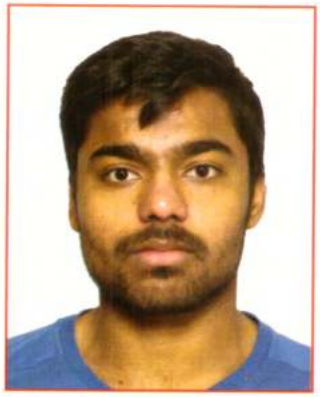

**Rishabh Nehra**
Gold Medal
Javelin Throw (76.64M)
2nd Khelo India
University Games-2021

**Sakshi Sharma**
Gold Medal–Javelin
3rd National Open
Javelin Throw Championship,
New Delhi 2021
B.P.E.S.-III

**Aarti Sharma**
Yoga
AIU Particpation 2021
B.Sc. II

**Tanya Bhardwaj**
Awarded with Vice Chancellor
Gold Medal in Library Science
(University Topper) 2020-21

**Shristy**
Awarded with Vice Chancellor
Gold Medal in Biotechnology
(University Topper) 2020-21

**Anchal**
Qualified Net JRF in History

# महाविद्यालय की गतिविधियाँ

21 जून 2022 को महाविद्यालय में योग दिवस का आयोजन

महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय के वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागिता

# महाविद्यालय की गतिविधियाँ

डॉ. पी.के. गर्ग
प्राचार्य पदभार ग्रहण
करते हुए

जूलॉजी विभाग
में सेमिनार का आयोजन

महाविद्यालय में राज्य
सरकार की योजना के
अन्तर्गत फोन/टैबलेट
वितरण

# महाविद्यालय की गतिविधियाँ

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते प्राचार्य

महाविद्यालय में बंसत पंचमी की पूजा का आयोजन

महाविद्यालय की ओर नि:शुल्क पेयजल शिविर का आयोजन

# श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता

श्रीराम चरित्र पोस्ट प्रतियोगिता की मुख्य अतिथि श्रीमती रेखा सक्सैना जी को सम्मानित करते हुए प्राचार्य एवं महिला प्रकोष्ट अध्यक्ष डॉ. वन्दना शर्मा

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता कार्यक्रम में डॉ. बी.सी. पाण्डेय द्वारा प्राचार्य का स्वागत

महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ द्वारा "श्रीराम चरित्र" पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 'श्रीराम चरित्र' पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 'श्रीराम चरित्र' पोस्टर प्रतियोगिता का निर्णायक मण्डल

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

# श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को सम्मानित करते प्राचार्य एवं निर्णायक मण्डल

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

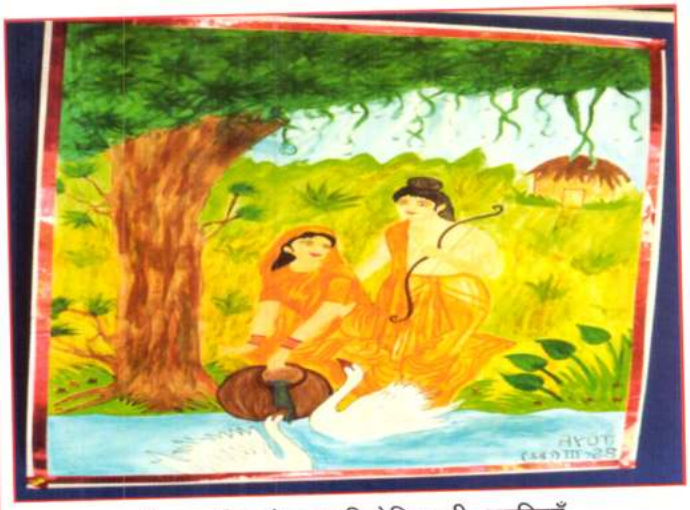

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

श्रीराम चरित्र पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

# मिशन शक्ति

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'स्वास्थ्यवर्धन एवं पोषण जागरूकता' कार्यक्रम का आयोजन।

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'स्वास्थ्यवर्धन एवं पोषण जागरूकता' कार्यक्रम का आयोजन।

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता' कार्यक्रम का आयोजन।

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में आयोजित 'महिला सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलंबन' कार्यक्रम

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'बालिका सुरक्षा शपथ अभिभावकों द्वारा' का आयोजन

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'बालिका सुरक्षा शपथ समारोह' का आयोजन

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'बालिका सुरक्षा शपथ समारोह' का आयोजन

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो' कार्यक्रम का आयोजन।

# मिशन शक्ति

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'चुप्पी तोड़ो खुलकर बोलो' कार्यक्रम का आयोजन।

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में आयोजित 'रॉल मॉडल महिला हमारा गर्व'

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में आयोजित 'रॉल मॉडल महिला हमारा गर्व'

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'महिला सुरक्षा एवं कानूनी जागरूकता' पर व्याख्यान का आयोजन

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 'स्वच्छता एवं स्वास्थ्य अभियान'

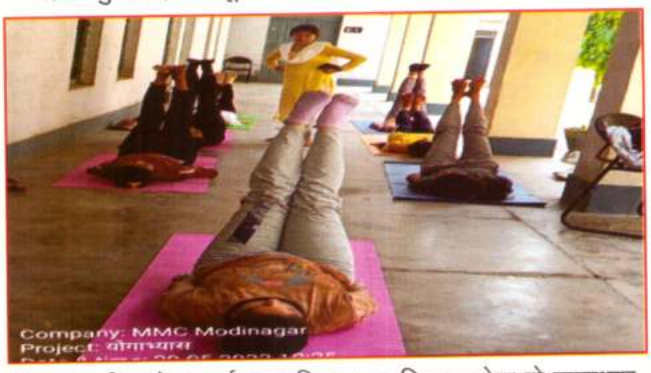


मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में योगाभ्यास का आयोजन

मिशन शक्ति के अन्तर्गत महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'मार्शल आर्ट' का अभ्यास

महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ

# राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

# Editorial

Winston Churchill once said, "Success is hopping from failure to failure." Successful people do not make it to the top seamlessly and without mistakes along the way. As the old saying goes, Quitters never win and winners never quit. It is motivation that plays a key role in whether we become successful in life or not, whether we reach our goals or not. This rings true for all people regardless of their status, profession or age. We cannot achieve much without the determination to reach our goals no matter how big or small they are. In whatever we do, we will never succeed if we lack the will and perseverance to hurdle obstructions that get in the way.

What holds us back from our goals is fear. It is common among us. When too much fear gets in the way, we end up doing nothing. Fear stems from lack of confidence and irrational thinking. You have to understand that fear of what might come out down the track does not increase your chances at succeeding. Sometimes we are afraid to take risks because we think the odds are against us. We become so consumed by fear and anxiety to the degree that we become irrational. To break out of our comfort zone is to have courage. Courage, one must remember, is not the absence of fear. While we cannot dismiss fear totally, we can increase our chances of winning by being rational in dealing with our circumstances as they are in the present moment. As they say, it is all in the mind.

I would like to take this opportunity to thank my entire editorial team: Dr. Prachi Agarwal, Dr. Komal Gupta, Ms. Mona Nagpal, Mr. Arun Kumar Singh, Dr. Geetanjali Sharma and Dr. Richa Yadav for their hard work and cooperation. I would also like to thank Mr. Pawan Bhatnagar and Mr. Sanjay Maskara for their whole hearted support in the publication of this magazine.

**Dr. Vivek Sheel**
Editor-in-Chief

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | जल ही जीवन है! | 5 |
| 2. | वृक्ष की पीड़ा | 6 |
| 3. | जल संरक्षण | 6 |
| 4. | मृत्यु का डर | 6 |
| 5. | अहम बातें | 7 |
| 6. | महिलाओं! अपनी शक्ति पहचानो | 8 |
| 7. | क्यों कर मैं चुप रहूँ? | 9 |
| 8. | माँ | 10 |
| 9. | आशा : सफलता की एक किरण | 11 |
| 10. | पर्यावरण को प्रदूषण से बचायें | 11 |
| 11. | कौन बड़ा है हम में? | 12 |
| 12. | माँ! मुझे भी पंख लगा दो | 12 |
| 13. | सफल होने के मंत्र | 13 |
| 14. | हम इसी में खुश हैं | 14 |
| 15. | आहिस्ता चल जिन्दगी | 14 |
| 16. | विद्यार्थी जीवन में शिक्षा का महत्त्व | 15 |
| 17. | जीवन–सार | 16 |
| 18. | सफलता का द्वार: समय का सदुपयोग | 16 |
| 19. | भारतीय गाँव व आधुनिकता के मध्य मानसिक दूरी | 17 |
| 20. | रंगों का रंग–बिरंगा संसार | 18 |
| 21. | सम्भाषण कला | 20 |
| 22. | मुक्तक | 21 |
| 23. | बेटियाँ | 22 |
| 24. | दो दृग में छुपा महानाद! | 23 |
| 25. | आजादी का आवाह्न | 24 |
| 26. | रानी लक्ष्मीबाई – स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना | 26 |
| 27. | भगवान | 31 |
| 28. | बेटियाँ | 31 |
| 29. | नारी | 32 |

| | | |
|---|---|---|
| 30. | पिता | 33 |
| 31. | समय | 33 |
| 32. | देश भक्ति और राष्ट्र निर्माण | 34 |
| 33. | Development in The Communication Method | 37 |
| 34. | आदर्श वाक्य | 41 |
| 35. | एक विश्वास | 41 |
| 36. | भारतीय पर्यटन उद्योग | 42 |
| 37. | साइबर हमला : कैसे बचें? | 46 |
| 38. | खेल आखिर क्यों? | 48 |
| 39. | राष्ट्रीय सेवा योजना 2021–22 | 50 |
| 40. | Value of Knowledge | 53 |
| 41. | When We Share | 54 |
| 42. | Do you Know | 54 |
| 43. | Plight of Indian Women | 55 |
| 44. | Global Warming | 56 |
| 45. | A Fast Spreading Disease : Diabetes | 57 |
| 46. | Sleep | 58 |
| 47. | Role of public libraries in Distance Education | 59 |
| 48. | Information Access in Libraries | 60 |
| 49. | Product Life Cycles | 61 |
| 50. | Henri Favol (The Father of Administrative Management) | 64 |
| 51. | What Is Nobel Prize? | 66 |
| 52. | Panchayati Raj - Role and Contribution Of Women | 68 |
| 53. | Annual Report 2021-2022 Department of Library & Information Science | 70 |
| 54. | Annual Report 2021-2022 Department of Biotechnology | 71 |
| 55. | Annual Report 2021-2022 Department of Zoology | 72 |


पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व स्वयं प्रस्तोता का है।

## STATEMENTS ABOUT THE OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT THE MAGAZINE

**M. M. College Magazine**

# RITAMBHARA

**Form IV**

**(See Rule 8)**

| | | |
|---|---|---|
| Place of Publication | : | M.M. College Modinagar<br>(Distt. Ghaziabad) |
| Periodicity of Publication | : | Annual |
| Publisher's Name | : | Dr. P.K. Garg |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | M.M. College Modinagar<br>(Distt. Ghaziabad) |
| Editor's Name | : | Dr. Vivek Sheel |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | Deptt. of History<br>M.M. College Modinagar<br>(Distt. Ghaziabad) |
| Printer's Name | : | S.B. Printers |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | Opp. Kotwali<br>Old Tehsil, Meerut (U.P.)<br>Mob: 9837020342 |
| Name and address of individuals Who own the magazine and Particulars of shareholders holding more than once percent of the total capital | : | Nill<br>(A College Magazine) |

I, Dr. P.K. Garg hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

**Dr. P.K. Garg**
Principal

# जल ही जीवन है!

मीतू ना
बी.एस-सी. तृतीय

संसार की हर वस्तु में बसा है पानी फिर भी

ना जाने क्यों कम हो रहा है पानी।

तेरी आँखों में आँसू है जो तू समझे तो मोती है

जो न समझे तो बस ये बहता हुआ पानी है।

तो कृपया इन आँसुओं को भी तुम न बहाओ।

क्योंकि .....

पानी की चाहत तो तड़पती धरती से पूछो,

पानी की चाहत तो सूखी नदियों से पूछो,

पानी की चाहत तो सूखे रेगिस्तान से पूछो,

पानी की चाहत तो सूखी झीलों से पूछो,

पानी की चाहत तो बिन पानी के तड़पती मछलियों से पूछो,

बस कहना यही था जल ही जीवन है, जल ही जीवन है।

रंग बिरंगी होती है जिसको तितली कहते है।

आसमान में जब वो आती है, सबके मन को भाती है,

पानी की दो बूँदे किसी की जिन्दगी बचा सकती है।

मगर देखो आज का इन्सान पानी बहाने में कितना लीन है, जबकि वही पानी हमको जीवन देता है शायद हम मनुष्य पानी को नहीं समझते। लेकिन इस जल की महत्ता तो एक जल की रानी ही बता सकती है।

एक मछली से पूछो जल की महत्ता क्या होती है।

तो कृपया पानी बचाओ।

## वृक्ष की पीड़ा

रवि कुमार
बी.ए. प्रथम वर्ष

अपराध किये क्या हमने
पूछे कोई मानव से ?
चलाकर आरी हमको काटे
कौन बचायेगा ? इसको
प्रदूषण के दानव से
उमड़-घुमड़कर काले बादल
कैसे फिर-फिर आएँगे ?
धरती की प्यासी काया पर
कैसे जल बरसाएँगे ?
जहरीली वायु के विष में
सारे ही मर जाएँगे।
मत कर मानव हम पर अत्याचार
धरती के हैं हम अनमोल श्रृंगार।

## जल संरक्षण

सोनल
बी.ए. तृतीय वर्ष

पानी तो बचाया जा सकता है
लेकिन बनाया नहीं जा सकता
सोचने की यह बात है
दादाजी ने नदी में पानी देखा
पिता जी ने कुएँ में
हमने नल में देखा
बच्चों ने बोतल में
अब उनके बच्चे कहाँ देखेंगे
सोचने की यह बात है
जल ही जीवन है और
जल से ही संसार है
जल सुरक्षित आप सुरक्षित
आप सुरक्षित जग सुरक्षित
जल बचाओ जग बचाओ।

## मृत्यु का डर

ज्योति रानी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक भद्र पुरुष समुद्र तट पर भ्रमण के लिये गया। उसने देखा कि एक मछुआरा तट पर आया। उसने नौका में सवार होकर जल के अन्दर जाल फैलाया। उसमें मछलियाँ फँस गई। वह उन्हें लेकर लौटा तथा उन्हें एक टोकरी में डाल दिया। उस व्यक्ति ने मछुआरे से बातचीत शुरु कर दी। उसने पूछा, 'तुम्हारे परिवार में कौन-कौन हैं? तुम्हारे पिता है?' मछुआरे ने कहा, 'नहीं, वर्षों पहले समुद्र में मछली पकड़ते समय उन्हें एक बडी मछली ने निगल लिया।'

उसने पूछा, 'तुम्हारा भाई तो होगा?' मछुआरे ने उत्तर दिया, 'तूफान में फँसकर उसकी नौका डूब गयी। वह समुद्र में समा गया।' उसने उसके अन्य सम्बन्धियों के बारे में पूछा। उसने बताया कि वे भी ऐसी घटनाओं में मर गये। भद्र पुरुष ने कहा, "भैया! जब तुम्हें पता है कि ये समुद्र तुम्हारे विनाश का कारण है, तो फिर तुम समुद्र में क्यों आते हो? तुम्हें मृत्यु से भय नहीं लगता?"

मछुआरा भले ही थोड़ा पढ़ा-लिखा था, परन्तु ज्ञानी था। उसने भद्र व्यक्ति से पूछा- "सेठ साहब! क्या आपके दादा, परदादा, पिता, बड़े भाई सब जीवित हैं? वे सभी तो समुद्र तट से दूर रहते होंगे। फिर उनकी मृत्यु हुई या नहीं? समय आने पर मौत कहीं भी अवश्य आयेगी। फिर मैं उससे क्यो डरूँ?" भद्र पुरुष को तीर्थंकर महावीर की वाणी याद आ गई, "मृत्यु का आगमन किसी भी तरह से हो सकता है। वज्र निर्मित महल में भी मनुष्य काल के पंजे से नहीं बच सकता।"

# अहम बातें

**अन्शुल मित्रोलिया**
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

गुस्सा उस मोमबत्ती की तरह होता है,
जिसमें दोनों तरफ आग लगी हो
लगता है रोशनी देगी.....
मगर जलता हमारा अपना हाथ है।
डूबना आसान है, बस हाथ चलाना छोड़ दो,
तैरना भी असान है, बस हाथ चलाते रहो,
चुनना हमें होता है।
गलती करना इंसान होने की निशानी है,
मगर महान हम तब बनते हैं,
जब अपनी गलती मानना सीख लेते हैं।
सवाल उठेंगे.....
मजाक उड़ेगा.....
कोई हँस देगा हमारे हौंसलों पर,
जरुरी ये है कि आखिरी हँसी हमारी हो।
ढूँढो तो पत्थर.....
देखा तो कोयला....
तराशा तो हीरा.....
हर नगीने की बस इतनी सी कहानी होती है।
दुनिया को आगे ले जाने के लिए जरुरी है,
कि हम सबको साथ लेकर बढ़े।
किसी को पीछे छोड़ देना इलाज नहीं समस्या है॥

# महिलाओं! अपनी शक्ति पहचानो

ज्योति
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

हमारे देश में महिलाओं के विकास के लिए स्वतंत्रता के बाद से ही विभिन्न क्षेत्रों में विकास की सम्भावनाओं के द्वार खुले। इसके साथ ही अनेक सुविधाएँ, कानूनी अधिकार, नये विकल्प भी महिलाओं को प्राप्त हुए। इसी कारण महिलाओं में आत्मविश्वास ही नहीं बढ़ा, बल्कि अनेक क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं। लेकिन क्या 25% महिलाओं के विकास करने से महिला सशक्तिकरण का सपना पूरा हो जायेगा। कैसी विचित्र विडम्बना है कि कुल आबादी में से 75% महिलाएँ आज भी निरक्षरता व अज्ञानता से जुड़ी हुई है।

हमारे समाज में आज भी महिलाएँ बेटी के लिए नहीं, बल्कि बेटे के लिए दुआ माँगती हैं। कुछ महिलाएँ तो जन्म से पूर्व ही बेटी का परित्याग कर देती हैं। जनसंख्या के अनुपात में महिलाओं की संख्या के गिरते ग्राफ का कारण भ्रूण हत्या है। इसके लिए समाज के साथ-साथ महिलायें भी कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं। "क्या वजह है कि एक महिला ही दूसरी महिला का दु:ख-दर्द समझना तो दूर, उस पर अत्याचार करती है। एक माँ की ममता तब कहाँ दफ़न हो जाती है, जब वह भ्रूण हत्या करती है।" वैसे तो हम बच्चों को ईश्वर का स्वरूप मानते हैं। फिर क्यों उस ईश्वर के स्वरूप को जीवन का काँटा समझकर पनपने से पहले ही उखाड़ कर फेंक देते हैं। हम तो जानवरों से भी गये-गुजरे हैं। वे अपने बच्चों के साथ किसी प्रकार का भेद-भाव तो नहीं करते।

हमें अपने समाज को जागरुक करने के साथ-साथ अपनी शक्तियों को पहचानना होगा। अपने धैर्य, दृढ़ विश्वास, आत्मशक्ति व स्वाभिमान को पहचानना होगा। तभी हमारे देश में महिलाएँ पूर्ण रूप से सशक्त हो पायेंगी। इसलिये महिलाओं! जागो! उठो!! अपनी शक्ति पहचानों और परिवार में, समाज में अपना सही स्थान और उचित सम्मान प्राप्त करो!!! नारी के उत्थान के साथ ही समाज में समता, स्नेह और सौहार्द पनप पायेंगे।

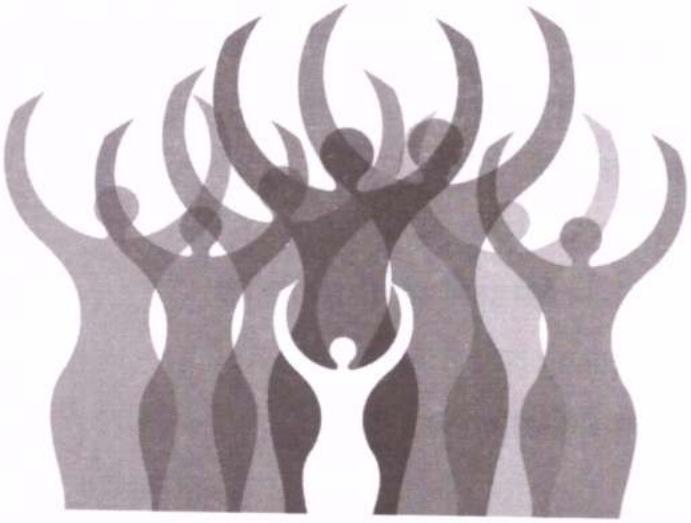

# क्यों कर मैं चुप रहूँ?

**मयंक**
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

जब रिश्ते हुए कलंकित हो रहा मानवता का खून
जब दुश्मन बन अपना लहू, करे अपने जिगर का खून
तो देखकर बुझती लौ विश्वास की, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

जब से शिक्षा में राजनीति एवं नेताओं का हस्तक्षेप हुआ
शिक्षक हुआ लाचार, विद्यार्थी का भविष्य बेकार हुआ
तो देखकर शिक्षा की ऐसी दशा, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

जब निर्माता-निर्देशक ने भाषा व साहित्य का मेल बिगाड़ दिया
अभिनेत्रियों ने न्यून-वस्त्र धारण कर संस्कृति को तार-तार किया
तो देखकरधुनिक आदिमानव को, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

जब डॉक्टर ने रोगी का उपचार कर उसे विकलांग किया
करके किडनी, अन्य अंगों का व्यापार, देश को शर्मशार किया
तो देखकर धरा के ईश का ऐसा चेहरा, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

जब एक सत्ताधारी ने अपने जन्म दिन का इश्तहार दिया
तोहफों के लिये बाहुबलियों ने देश की शान का संहार किया
तो मंदी के दौर में देखकर ऐसे मंहगे उपहार, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

जब 21वीं सदी के उलेमाओं ने धर्म के मर्म को बदल दिया
बेगुनाहों के खून से खुद ही इंसानियत का मुँह बन्द किया
तो देखकर बेजुबान दीवारों की वेदना, क्यों कर मैं चुप रहूँ?

# माँ

अभिषेक कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

गाँव में भी अब ज्यादा बड़ा कमरा नहीं होता।
गाँव में भी अब इंसा तसल्ली से नहीं सोता।
भूख, प्यास और गरीबी छीन रही है।
अब लोगों का सुकून!
क्योंकि आज भी हमारे देश का किसान
भर पेट खाना खा कर नहीं सोता।
जब तक मैं नहीं सोता।
मेरी माँ भी नहीं सोती है।
चोट मुझे लगती है और तकलीफ
मेरी माँ को होती है।
बाहर से तू खुश रहती है पर
अपने अन्दर गमों का पहाड़ सहती है।
माँ तू कितनी भोली है, तू कुछ नहीं कहती
पर तेरी आँखें सब कुछ कहती हैं.....
माँ जब मैं रात में आसमान के नीचे बैठकर तारे देखता हूँ।
तो मुझे उन तारों में एक रोशनी दिख जाती है।
माँ वापस आ जा ना तेरी बहुत याद आती है।
बचपन में जब मुझे चोट लगती थी तो
माँ तू ही तो दवा लगाती थी।
माँ मैं कैसे भूलू वो तेरी मीठी-मीठी बातें।
जो तू लोरी गा कर सुनाती थी।
माँ सुबह-सुबह तू जल्दी उठाती थी और अपनी प्यारी सी नींद भी गँवाती थी।
आराम से सोते रहे तेरे बच्चे, बच्चों को कच्ची नींद से भी नहीं उठाती थी।
माँ अब वो सारी बातें बहुत याद आती हैं।
माँ वापस आ जा ना तेरी बहुत याद आती है.....

# आशा : सफलता की एक किरण

**रवि कुमार**
बी.ए. प्रथम वर्ष

आशा और निराशा जीवन की दो विशिष्ट अवस्थाएँ हैं। आशा- जिसे हम सफलता की एक किरण कहते हैं, इन्सान के सपनों में नया जोश, उत्साह भर देती है। जबकि निराशा से घिरा इन्सान कल्पना में ही कष्ट को सजीव बना देती है।

विद्यार्थी जीवन में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि विद्यार्थी किस तरह विभिन्न परिस्थितियों में अपने आप को आशान्वित रखता है और अपना कार्य पूरी मेहनत, ईमानदारी से करता है। इस चुनौती पर विजय प्राप्त करके वह धीरे-धीरे सफलता के द्वार तक पहुँच जाता है। जबकि निराशा से घिरा विद्यार्थी हर समय अपनी परिस्थितियों पर रोता रहता है। आशावादी हमेशा प्रकाश की तरफ अपनी दृष्टि रखता है जबकि निराशावादी अपने आप को हमेशा अंधकार से घिरा हुआ महसूस करता है, क्योंकि उसमें उत्साह, संकल्प और आशा का अभाव होता है।

अन्त में यह कहना चाहता हूँ कि आशा और निराशा दोनों का उद्‌भव स्थल हमारा मन-मस्तिष्क ही है। अपने दृष्टिकोण को बदलिए। आशावादी होना उतना ही आसान है जितना कि निराशा के साथ रहना। इसलिये अपने आप को हमेशा आशान्वित रखें। एक दिन जीवन में सफलता का आगमन अवश्य होगा, अवश्य होगा।

# पर्यावरण को प्रदूषण से बचायें

**अमित कुमार**
बी.बी.ए. प्रथम वर्ष

उस दिन जब प्रदूषण से जग सारा घबरायेगा,
तभी होगा इस पर नियन्त्रण जब कोई रोक इसे ना पायेगा
अब तक है हाथ में सब कल अकाल पड़ जायेगा।
पीने को पानी होगा नहीं सारा जग भूखा मर जायेगा।
घर-घर होगा हर एक बीमार,
क्यों आज, ना मैं सोचूँ, ना तुम करो विचार,
अब भी है वक्त तू कर ले विचार,
अरे मानव ! कम से कम तू अपने को तो सुधार।
अगर हम कुछ बातों पर गौर फरमायें,
छोटों को बताये और बड़ों को समझायें।
प्लास्टिक की वस्तुएँ कभी ना अपनायें;
खनिज पदार्थों को कम से कम उपयोग में लायें,
लकड़ी की जगह एल.पी.जी. ही जलायें,
बड़े-बड़े लाउड स्पीकरों का बनना रुकवायें
हानिकारक रसायन नदी में ना बहायें
सड़कों को रखें साफ और गन्दगी ना फैलायें,
मेरी यह विनती है सबसे, पर्यावरणो प्रदूषण से बचायें।

# कौन बड़ा है हम में?

**सुनील कुमार**
कार्यालय लिपिक

एक दिन मानव शरीर के पाँचों घटक तत्व आपस में ही उलझ बैठे, जिनसे इस शरीर का निर्माण हुआ है। वायु कहता था- 'मैं सबसे बड़ा हूँ। मैं जाऊँ तो श्वांसहीन होकर एक ही क्षण में जीवन लीला समाप्त हो जाये।' तब पृथ्वी तत्व बोला- 'अरे मुझसे तो ये शरीर खड़ा हुआ दिखता है। विभिन्न अंगों और इन्द्रियों का आकार न हो तो तुम सब अपनी अभिव्यक्ति कैसे कर सकेंगे?'

जल तत्व भी चुप न बैठ सका और बोला- 'जीवन का आधार तो मैं हूँ। रस न हो तो सब कुछ पलक झपकते ही समाप्त हो जायेगा।' अग्नि ने अब ठहाका लगाकर कहा- 'अरे, मेरी क्षमता तथा महत्व का अनुमान तो तुम लगा ही नहीं सकते, मैं न रहूँ तो यह शरीर क्षण मात्र में बर्फ हो जाये।' अब बारी आकाश तत्व की थी, सो वह भी इठलाकर बोला- 'मेरी उपयोगिता का मूल्यांकन तुम सबकी पहुँच से परे है। समस्त सूक्ष्म शक्तियों का संचालन तो मैं ही करता हूँ। शब्द मेरी तन्मात्रा है, मैं न रहूँ तो संसार खामोशी में डूब, समुद्र जैसा लगने लगे।'

आत्मा बैठा-बैठा यह संवाद सुन रहा था। उसने धीरे से शरीर में से प्रयाण कर दिया। पाँचों तत्व उसके पीछे-पीछे ऐसे चल दिये, जैसे मधुमक्खियों के छत्ते से उनकी रानी चल देती है, तो सारी मक्खियाँ उसके पीछे-पीछे चल देती हैं।

अब वे पाँचों ही तत्व अच्छी तरह समझ चुके थे कि **मनुष्य शरीर में आत्मा ही प्रधान है। जीवन और व्यवहार में उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।**

# माँ! मुझे भी पंख लगा दो

**पारुल वर्मा**
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

मुझको जीवन दर्शन करा दो
इस गगन की सैर करा दो
मैं बेकरार हूँ उड़ने को माँ,
तुम मुझे भी पंख लगा दो।

तेरे बदन में लेटी-लेटी
सपनों में ही उड़ती रही हूँ
जब भी चाहा उड़ना तुमने,
सोचो मैं भी उड़ती रही हूँ।

उड़ान तुम्हारी देखकर
मन मेरा भी व्याकुल हुआ
माँ, लगा दो पंख मुझे,
फिर ये गगन अपना हुआ।

मैं जा बैठूँगा बादल पर
बिजली से मैं खेलूँगी
और छुपा कर बाहों में,
अपना चाँद मैं ले लूँगी।

माँ मेरे सपने बहुत बड़े हैं
जीने काएक ही मौका दे दो
नहीं बनूँगी बोझ मैं तुम पर,
खेल दो मुट्ठी, उड़ जाने दो।

मुझको जीवन दर्शन करा दो
इस गगन की सैर करा दो
मैं बेकरार हूँ उड़ने को माँ,
आओ मुझे भी पंख लगा दो।

# सफल होने के मंत्र

निशा
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

1. अगर दिल में हिम्मत और हौंसला है तो आसमान कदमों में होता है। हिम्मतवालों को ही कामयाबी हासिल होती है।
2. बिना कठिन परिश्रम के सफलता की कामना करना, अंधेरे में तीर चलाने जैसा होता है। सफलता का कोई रहस्य नहीं है, वह केवल घोर परिश्रम चाहती है।
3. किसी ध्यये की सफलता के लिये पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है।
4. बिना कोशिश किये यह मान लेना कि हमें आता नहीं है, ठीक नहीं होता। अपनी क्षमताओं का परीक्षण करना ही सीखने का सबसे अच्छा तरीका है।
5. आलस्य को त्यागकर सिर्फ अपना लक्ष्य ध्यान में रखो। अगर तुम चार-पाँच सालों में जी-तोड़ मेहनत करो तो अपने आने वाले चालीस साल आराम से काट सकते हो, वरना सोच लो क्या होगा ?
6. जितना हो सके, कम बोलो, क्योंकि मौन, बुद्धि तीव्र करने का सबसे अच्छा तरीका है।
7. आपकी अन्तर-आत्मा की स्वीकृति के बिना आपको कोई नीचा साबित नहीं कर सकता।
8. मेहनत और सकारात्मक सोच के बल पर अपना निशाना साधो, मेहनत और लगन ही सफलता सुनिश्चित करते हैं।
9. अपने लक्ष्य को केन्द्र में रखकर हर परिस्थिति का सामना करें और घबरायें नहीं। जब आप पूरे विश्वास के साथ इस कर्त्तव्य को पूरा करोगे तो परिस्थितियाँ आपको झुककर सलाम करेंगी। उगते हुए सूरज की हर कोई आराधना करता है।
10. किसी विद्यार्थी की सफलता में उसकी अच्छी संगति का भी अहम योगदान होता है।

**'कामयाबी उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जाना होती हैं**
**पंखों से कुछ नहीं होता, हौंसलों से उड़ान होती है।'**

# हम इसी में खुश हैं

**नीलम चौधरी**
एम.ए. फाइनल

माना कि गरीब और भूखमरी है यहाँ, फिर भी हँसी हर होठों पर है यहाँ।
क्षेत्रवाद, जातिवाद और नक्सलवाद है यहा, फिर भी गुलों मोहब्बत के बागवाँ भी है यहाँ।
धूल-मिट्टी और कीचड़ लबालब है यहाँ, लेकिन उस मिट्टी को हाथों और मुँह से उड़ाता बच्चा भी है यहाँ।
देश के नाम पर कफन में लिपटने वाले अरमान हैं यहाँ, और किसी असहाय दुर्बल को मिलने वाले कन्धे भी हैं यहाँ।
गाँव-खेतों से जाने वाले रास्ते हैं यहाँ, और देश की उन्नति के दर्पण बड़े शहर और छोटे कस्बे भी है यहाँ।
माना कि खून की बूँदे बहाने वाले हैं यहाँ, पर अपनी जान दाँव पर लगाकर दूसरों की जान बचाने वाले भी हैं यहाँ।
सीता जैसी शील, पवित्र नारी है यहाँ, लेकिन विरह से नम पलकों को ओट में छिपाये खड़ी उर्मिला भी है यहाँ।
सपनों को हकीकत में लाने वाले लोग हैं यहाँ, और सपनों की दुनिया में पूरी जिन्दगी गुजार देने वाले भी हैं यहाँ।
हर रोज निकलता है, हर कोई मंजिल पाने के लिए यहाँ, लेकिन शाम को घर जल्दी आना,
ये कहने वाली चौखट पर खड़ी बूढ़ी माँ भी है यहाँ।

# आहिस्ता चल जिन्दगी

**संगीता**
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

आहिस्ता चल जिन्दगी, अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

रफतार में तेरे चलने से
कुछ रुठ गए कुछ छूट गए
रुठों को मनाना बाकी है
रोतों को हँसाना बाकी है॥

कुछ रिश्ते बनकर टूट गए
कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गए
उन टूटे-छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है।

कुछ हसरतें अभी अधूरी है
कुछ काम भी और जरुरी है
जीवन की उलझी पहेली को
सुलझाना अभी बाकी है॥

# विद्यार्थी जीवन में शिक्षा का महत्त्व

**अमन कुमार**
एम.ए. द्वितीय वर्ष

मानव जीवन का लक्ष्य आनन्द प्राप्ति है। सभी मनुष्य सुखऔर आनन्द की चाहना करते हैं। आनन्द-प्राप्ति ज्ञान से ही संभव है। ज्ञान ही मनुष्य का सर्वोत्तम सहायक है। मनुष्य के अन्दर विवेक शक्ति है जो उसे अन्य पशु, पक्षियों से अलग करती है। स्वभाविक ज्ञान सभी पशु-पक्षियों और मनुष्य में समान रूप से पाया जाता है। खाने, पीने, सोने आदि शारीरिक आवश्यकताओं से जुड़ा ज्ञान ही स्वभाविक ज्ञान है जो पशु, पक्षियों और मनुष्य को जन्म से प्राप्त है। मनुष्य के अन्दर विवेक शक्ति है जिसके आधार पर ज्ञान का विकास किया जा सकता है और यह केवल मनुष्यों को ही प्राप्त है। विवेक शक्ति द्वारा ज्ञान में वृद्धि अच्छी शिक्षा से ही हो सकती है। अत: स्पष्ट है कि शिक्षा ही वह साधन है जो एक सभ्य समाज का निर्माण करती है।

आज के समय में वैसे तो अनेक विद्यार्थी हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता रखते हैं, परन्तु फिरभी यह दृष्टिगोचर होता है कि विद्यार्थियों की ज्ञान-अर्जन में रुचि कुछ कम हुई है। ज्ञान के प्रति रुचि कम होने के कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख है- शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा का अभाव, समाज का अति व्यक्तिवादी हो जाना और व्यक्ति का धन लोलुप हो जाना।

धन मानव जीवन में अति महत्त्वपूर्ण है जिसको सभी स्वीकार करते हैं, परन्तु मनुष्य के पास एक उन्नत समाज न हो तो केवल धन से समाज का निर्वाह नहीं हो सकता। क्या ऐसे समाज में जिसमें चोरी, अपहरण, बलात्कार जैसे अतिदूषित व्यवहार होते हो, कोई धनी व्यक्ति रहना चाहेगा ? अगर नहीं तो धन कमाने के साथ-साथ मनुष्य का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने चारों ओर के समाज को उन्नत बनाने में योगदान दे। इसलिए एक विद्यार्थी को भौतिक ज्ञान के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की भी शिक्षा देनी चाहिए।

शिक्षा-प्राप्ति में अनुशासन और कठोर परिश्रम का भी अतीव महत्त्व है। किसी कार्य को सुनियोजित तरीके से करना अनुशासन के अन्तर्गत आता है और किसी कार्य में सुनियोजित लगातार बनाये रखना यह कठोर परिश्रम से होता है। जो विद्यार्थी जीवन के आरंभ में जितना परिश्रम करता है बाद में उसे उतने ही बड़े ज्ञान और सुख की प्राप्ति होती है और जो विद्यार्थी अपने नवयौवन को आलस्य और विलासिता में निमग्न कर देते हैं वे अन्त में उस महान लाभ से वंचित रह जाते हैं।

शिक्षा-प्राप्ति में लक्ष्य का भी बड़ा महत्त्व है। जो विद्यार्थी अपने जीवन में सुविचारित लक्ष्य बना कर आगे बढ़ते हैं वे परिश्रम से उसे पा जाते हैं। लक्ष्यविहीन जीवन एक बोझे के समान है जिसे बहुत से मनुष्य यों ही ढोया करते हैं। मनुष्य जीवन का मिलना एक सुयोग्य अवसर है जिसका उपयोग ज्ञान प्राप्ति और मनुष्य समाज की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। इस मनुष्य-जीवन का पूरा-पूरा उपयोग तभी संभव है जब लक्ष्य बनाकर जीवन जिया जाए। जब लक्ष्य सामने होता है तो मनुष्य कठिन से कठिन बाधाओं को पार कर वह पा लेता है जो वह चाहता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है शिक्षा का विद्यार्थी के जीवन में अति महत्त्व है। विद्यार्थी को लक्ष्य को सामने रख परिश्रम करना चाहिए। विद्यार्थी को शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम करते रहना चाहिए ताकि उसका शरीर और मन स्वस्थ रह सके। एक स्वस्थ शरीर, उत्साही मन, उचित शिक्षा, तार्किकता ही भौतिक विज्ञान में नवीन आविष्कारों को जन्म देते हैं और इनके द्वारा ही मानवीय मूल्यों का विकास संभव है। एक आदर्श विद्यार्थी, जो इन सभी गुणों को धारण करता है, कल के सभ्य समाज की आधारशिला है, जिसके ऊपर विहंगम और भव्य सभ्यता का निर्माण किया जा सकता है।

# जीवन-सार

सुरभि रानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

विश्व के सभी ग्रंथ महान,
वेद, उपनिषद्, बाइबिल, पुराण,
भागवत-गीता, रामायण, कुरान,
सभी का केवल एक बखान।
सत्य, ज्ञान, भक्ति आधारित,
कर्म करे प्रत्येक इन्सान॥

आत्मा अभेद्य, अजर, अमर,
मानव काया है नश्वर,
जग के मोह-माया बन्धन,
केवल झूठे आकर्षण॥

शरीर हमारा वृक्ष है जैसे,
आत्मा इस पर पक्षी समान।
तन-तरू जब मिट जाएगा,
पक्षी की कहीं और उड़ान॥

पाँच तत्व ही ईशकृपा हैं,
भू, जल, वायु, अग्नि, आकाश।
मानव हित बरसाते रहते,
जीवन, ज्योति, अन्न, प्रकाश॥

यदि मानव लालच में फँस कर,
उपभोग करे सीमा से बढ़कर।
यही तत्व क्रोधित प्रलय से,
कर सकते हैं सर्व-विनाश॥

# सफलता का द्वारः समय का सदुपयोग

अजय सिंह
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

अभी समय है अभी, नहीं कुछ भी बिगड़ा है,
देखो अभी सुयोग, तुम्हारे पास खड़ा है।
करना है जो काम, उसी में चित्त लगा लो,
अपने पर विश्वास रखो, संदेह भगा दो।

आएगा क्या समय, समय तो टला जा रहा,
देखो तो जीवन व्यर्थ, तुम्हारा चला जा रहा।
वीरों की भाँति खड़े हो जाओ, अब भी,
कर लो कुछ जग बीच, जग जाओ अब भी।

उद्यमी को कहीं भी, सुसमय मिल जाता,
समय नष्ट कर नहीं, सुख कोई भी पाता।
आलस ही है करा रहा, ये सभी बहाने,
जो करना हो करो अभी कल क्या हो जाने?

ऐसा सुसमय भला, और कहाँ तुम पाओगे?
खोकर पीछे इसे, सदा ही पछताओगे।
तो इसमें वह काम नहीं, क्यों तुम कर जाओ?
सुखी रहे संसार तथा, तुम भी सुख पाओ।

# भारतीय गाँव व आधुनिकता के मध्य मानसिक दूरी

दीपक शर्मा
भौतिकी विज्ञान विभाग

हम सभी स्वयं को विश्व के सर्वाधिक अन्वेषणपूर्ण, जटिल, भावनात्मक रूप से प्रतिबद्ध एक मिश्रित संस्कृति एवं सभ्यता के केंद्र को निकटतम स्थिति में विकसित होता अनुभव करते हैं। भारत शब्द ही ग्रामीण परिवेश व परिदृश्य का सूचक हैं, जिसमें विभिन्न भाषा, रंग व एकता का सामंजस्य हमें 6,40,867 लाख गाँवों में देखने को मिलता है। जिसमें देश की जनसंख्या का एक बहुत व्यापक अंश निवास करता है-जहाँ अनुभवपूर्ण वर्ग बुजुर्ग, युवा शक्ति व आगामी भारत के भविष्य की परछाई तथा देश की आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक पक्षों के सहयोगी व मूलभूत आवश्यकताओं का उद्भवकर्ता (किसान) देश के प्रत्येक वर्ग को सम व विषम परिस्थिति में दोनों में सदैव अपना अहंकार रहित योगदान शत-प्रतिशत देने के लिए अग्रणीय रहता है। जिसमें उसके अपने सुदृढ़ तर्क, परंपरागत अनुभव एक मार्ग का निर्माण करते हैं, तो आधुनिक प्रवाद के लिए एक विशिष्ट सुझाव का कार्य करते हैं।

वहीं अन्य पक्ष आधुनिकता के सहयोगी के रूप में शिक्षा प्रणाली, यातायात व संचार, प्रेस, अखबारों ने असंख्य परिवर्तनों को संजोया है। आधुनिकता को सरल नहीं कहा जा सकता अपितु, यह कई वर्गों के मध्य एक अवरोधक के रूप में बाध्यता प्रदान कर सकता है। जहाँ आय, व्यक्ति के रंग-रूप, जाति, धर्म तथा जीवन शैली व क्षेत्र आदि उपस्थित हो सकते हैं। परन्तु सत्य यही है कि आधुनिकता का सम्बन्ध मानवीय चेष्ट आधारित रचनात्मकता, ज्ञान, विज्ञान व विकास से है।

वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र भी आधुनिकता से अछूते नहीं रहे हैं, तीन से चार दशक पूर्व गाँव का परिदृश्य और वर्तमान वर्ष 2022 में भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों का वातावरण, ग्रामीण अधिगमकर्ता के लिए उतना ही अवसरयुक्त है जितना कि अन्य परिक्षेत्रों के लिये अंतर है तो केवल मानसिक स्थिति का जिसके रचनाकार हम स्वयं ही है। आधुनिकता को प्राप्त करने में हमें एक लम्बा अन्तराल लगा जिमसें असंख्य परिवर्तन एक संयोजक के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे। अंतत: "एक पीढ़ी ने स्वप्न को देखा और एक पीढ़ी ने तकनीक, विज्ञान व कौशलों के माध्यम से उस स्वप्न को साकार किया।"

# रंगों का रंग-बिरंगा संसार

संगीता रानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

रंगों का प्रभाव और परिणाम व्यापक होता है। रंग प्रतीकों के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। विश्व भर में इन रंगों की पहचान एवं प्रभाव विभिन्न रूपों में परिलक्षित होते हैं।

आंतरिक जीवन में रंगों का अद्‌भुत संसार जिस प्रकार दृष्टिगोचर होता है, ठीक उसी प्रकार बाहरी जीवन में भी रंगों की विविधता एवं विभिन्नता का परिवेश मोहक व आकर्षक होता है।

प्रकृति में मुख्य रूप से निम्न सात रंग दिखाई पड़ते हैं, जिनका अपना अलग-अलग रंग-बिरंगा ज्ञान-विज्ञान है, जो कि अति आश्चर्यजनक एवं रोचक है। आइये, हम इस रंग-बिरंगे ज्ञान को जानने की कोशिश करते हैं:-

1. **लाल रंग:** लाल रंग सौभाग्य का सूचक माना जाता है। कई भाषाओं में यह रंग सुन्दरता को परिभाषित करता है। हिन्दू धर्म में लाल रंग, खुशी, जिन्दगी, ऊर्जा और रचनात्मकता का प्रतीक माना जाता है। भारत और चीन में नई दुल्हन परम्परागत रूप से शादी में लाल कपड़े पहनती है। इंग्लैण्ड में लाल फोन बूथ, लाल पोस्टल वैन और लाल डबल डैकर बसें राष्ट्रीय प्रतीक हैं। चीन में नया साल लाल कपड़े पहनकर मनाया जाता है।

2. **बैंगनी रंग :** बैंगनी रंग सम्मान, मान-मर्यादा, आदर और आशाओं का रंग है। यह रंग शरीर के सभी तंत्रों को शांत बनाए रखने में सहायक होता है। मिश्र में बैंगनी रंग सद्‌गुण और विश्वास का प्रतीक माना जाता है। ब्रिटेन में बैंगनी रंग शोक दर्शाता है, जबकि जापान में बैंगनी रंग समृद्धि और सम्पन्नता का प्रतीक है। स्पेनिश रिपब्लिकन अकेला ऐसा देश है, जो अपने झण्डे में बैंगनी रंग का उपयोग करता है।

3. **काला रंग:** काला रंग अंधेरा, संदेह, अज्ञानता आदि का प्रतीक माना जाता है। अधिकतर लोग इसे उलझन वाला रंग मानकर इसके प्रयोग से हिचकिचाते हैं। पश्चिमी देशों में काला रंग शोक का प्रतीक माना जाता है। चीन में लड़कों के परम्परागत कपड़ों का रंग काला होता है। कई संस्कृतियों में "ब्लैक-डे" दु:खद दिन, महीने या

सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। जापानी संस्कृति में यह रंग श्रेष्ठता और अनुभव का प्रतीक है।

4. **नीला रंग:** नीला रंग कलात्मक अभिव्यक्ति और प्रेरणा जागृत करने के लिए प्रयोग किया जाता है। प्राचीन युग में लोकसेवक नीले रंग के कपड़े पहनते थे। ईरान में नीला रंग शोक का प्रतीक है। यह रंग उपचार में भी प्रयोग किया जाता है। यह शरीर की ऊर्जा को स्थिर रखता है, जिसका एंटीसैप्टिक प्रभाव पड़ता है।

5. **हरा रंग:** हरा रंग मित्रता, शांति तथा तनावमुक्ति के लिए आदर्श है। हृदय-चक्र इससे नियंत्रित होता है। प्राचीन ग्रीस में यह रंग जीत का प्रतीक माना जाता था। आयरलैंड का राष्ट्रीय रंग हरा है। मिश्र में मंदिरों के फर्श का रंग हरा होता है। मुस्लिम धर्म में यह एक पवित्र रंग माना जाता है।

6. **पीला रंग:** पीला रंग आत्मविश्वास को दर्शाता है। यह रंग उपचार में अति सहायक है। इसका उपयोग शक्तिशाली बीमारियों, जैसे हैपेटाईटिस और लिम्फेटिक डिसआर्डर से बचाव के लिए किया जाता है। भारत में हिन्दू लोग बसंत ऋतु मानने के लिए पीले रंग के वस्त्र पहनते हैं। यह रंग मुख्य रूप से वैश्य जाति और किसानों का रंग माना जाता है। इजिप्ट और बर्मा में पीला रंग शोक को दर्शाता है।

7. **नारंगी रंग:** नारंगी रंग आनन्द और बुद्धिमानी का प्रतीक है। इस रंग का प्रयोग तनाव, हाईपोथायइडिज्म, किडनी और फेफड़ों की समस्याओं का उपचार करने में किया जाता है। विश्व में इस रंग का प्रतीक बड़ा अनोखा है। नीदरलैंड का नारंगी रंग राष्ट्रीय रंग है। अमेरिका में बसे भारतीय मूल के निवासी इस रंग को रिश्तों से सम्बन्धित मानते हैं। राजनीति में नारंगी रंग पूरे विश्व में विपक्ष का प्रतीक माना जाता है। अंग्रेजी संस्कृति में इसे शक्ति, सम्मान, उदारता और उन्नति का प्रतीक माना जाता है।

# सम्भाषण कला

**वरुण कुमार**
एम.ए. द्वितीय वर्ष

आप सभी बहुत सी कलाओं से परिचित होंगे, जैसे- शिलपकला, वास्तुकला, नृत्यकला, नाट्यकला, संगीतकला आदि। किन्तु क्या आप जानते हैं कि सम्भाषण अर्थात् वार्तालाप यानि बातचीत भी एक कला है। आपने अक्सर महसूस किया होगा कि एक व्यक्ति अपनी भाषा के व्याकरण, उच्चारण, दोषमुक्त धाराप्रवाह और मधुर शब्दों के प्रयोग से आकर्षण का केन्द्र बन जाता है जबकि दूसरा व्यक्ति जो सम्भाषण कला में निपुण नहीं है, उसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है।

सम्भाषण की योग्यता एक ऐसा साधनहै, जिसके माध्यम से हम सभी प्रकार की संगति में अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं।

हमारे जीवन में सर्वाधिक प्रयोग सम्भाषण का ही होता है। इसके अतिरिक्त जीवन में कोई भी ऐसी विद्या, कला, कुशलता अथवा योग्यता नहीं है; जिसका लगातार इतना प्रयोग होता हो। सम्भाषण करने वाला व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति उससे वार्तालाप करने को उत्सुक रहता है।

सम्भाषण कला के महत्त्व को देखते हुये क्या आप नहीं चाहेंगे कि आपका भी सम्भाषण कौशल श्रेष्ठ हो; आप भी अपनी वाणी के मधुर प्रयोग से सभी व्यक्तियों के हृदय में अपने लिये स्थान बनायें? यदि आप ऐसा चाहते हैं, तो मैं आपको संवाद-कौशल को निखारने के कुछ उपाय बताता हूँ।

आप जब भी वार्तालाप करें, सदैव सत्य बोलें। याद रखें असत्य सम्भाषण आपको कुछ समय के लिये तो प्रसिद्धि दिला सकता है; किन्तु दीर्घकालीन अवधि में यह आपके लिये हानिकारक ही सिद्ध होगा। सदैव बहुत सोच-समझकर भावपूर्ण, अर्थपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद बोलिए; आपकी वाणी में इतनी मधुरता होनी चाहिये कि सभी व्यक्तियों के हृदय को स्पन्दित कर सके। इसके अतिरिक्त इस बात का सदैव ध्यान रखें कि आप किस वर्ग के लोगों के साथ सम्भाषण कर रहे हैं? यदि आप महिलाओं से बातचीत कररहे हैं तो आपके वार्तालाप में पूर्णतः शालीनता और शिष्टिता हो। किसी भी फूहड़ अथवा अनर्गल वार्तालाप से बचें। यदि आप अपने मित्रों अथवा युवा वर्ग के साथ बातचीत कर रहे हैं; तो विद्यालय, शिक्षा, वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, फैशन, कैरियर, प्रतियोगी परीक्षाओं, समाचार और समसामयिक घटनाओं पर वार्तालाप करें। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति या समूह की अवस्था और रुचि को ध्यान में रखकर ही सम्भाषण करें।

सम्भाषण करते समय जो विचार आप प्रस्तुत कर रहे हैं; वे विचार आपके आचरण में भी परिलक्षित होने चाहिये। साथ ही विचारों को प्रेषित करते समय आपकी भाव मुद्रा एवं पार्श्वमुद्रा भी बिल्कुल सटीक होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि सम्भाषण का अर्थ केवल अपने विचारों को प्रकट करना ही नहीं बल्कि दूसरों के विचारों को सुनना, समझना और जानना भी है। यदि आप चाहते हैं कि दूसरे आप की बातों को ध्यान से सुनें, तो आप अपने साथ-साथ उन्हें भी बोलने का अवसर

प्रदान कीजिये। उनके विचारों को सुनिये और फिर अपनी बातों को सुभाषित प्रकार से रखिये। सम्भाषण कला में पारंगत होने के लिए विषय पर आपको पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। बिना विषय की जानकारी के आप कुशल सम्भाषण नहीं कर सकते। यदि विषय की पूर्ण जानकारी न हो, तो चुप रहना ही बेहतर है। गलत, अस्पष्ट या अधूरी जानकारी आपको सदैव हँसी का पात्र बना देगी।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यदि आप सफलता के नये आयामों को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपका सम्भाषण कला में पारंगत होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रतिदिन इसका अभ्यास और कड़ी मेहनत ही सफलता के नये सोपानों की सीढ़ी है।

# मुक्तक

**राहुल कुमार**
बी.ए. प्रथम वर्ष

इम्तिहानों से न हरगिज घबराना चाहिए।
बल्कि ऐसे में स्वयं को आजमाना चाहिए।
हर किसी को यार जीने का हुनर आना चाहिए।
आँख भीगी हो, लवों को मुस्कराना चाहिए।
गगन भी सम्भव नहीं, धरती शिकारी की हुई,
ये परिन्दे हैं, इन्हें भी आशियानी चाहिए।
बाँसुरी की जिन्दगी से सीख ले ये जिन्दगी,
लाख सीने में जख्म हो, गुनगुनाना चाहिए।

गुजरे वक्त को भूलना आसान नहीं होता।
अपने गमों को हँसी में छुपाना, आसान नहीं होता।
जरुरीनहीं कि पूरी हो हर ख्वाहिश, लेकिन
अपनी ख्वाहिशों को दबा लेना, आसान नहीं होता॥
जिन्दगी जीने का सपना सजाते हैं सभी,
बिखरते ख्वात में से एक लम्हा चुरा लेना, आसान नहीं होता।
जब इन्सान बिकने लगे ऐसे बाजारों में,
अपना अस्तित्व बचा लेना आसान नहीं होता॥

# बेटियाँ

तरुण शर्मा
एम.कॉम. चतुर्थ सेमे.

यूँ ही मारते रहे जो बेटियाँ
तो ये दुनिया मिट जायेगी
भैय्या दोज के दिन भाई के मस्तक पर तिलक कौन लगायेगी
और राखी के दिन भाई की कलाई खाली रह जायेगी
ना कोई दूल्हा घोड़ी चढ़ पाएगा
ना कोई बहन गीत गायेगी।

जुल्मों सितम से स्वर्ग सिधारी हैं बेटियाँ
कैसे कहे सबकी दुलारी हैं बेटियाँ
बेटों को तो रहना सदा मौजो से खेलना
होती है उस घर में बिटियों की अवहेलना

एक परिवार की लाज होता है बेटा
दो-दो कुल की लाज होती हैं बेटियाँ
कैसे कहे सबकी दुलारी होती हैं बेटियाँ

बेटी तो है सबकी छाया
हर एक को इसने बनाया
जब बनती है एक माँ रूप
दर्द सहकर परिवार बसाया।

हर घर में नारी की पूजा हो
ऐसा संकल्प उठाता हूँ
मैं दुनिया की हर नारी के चरणों में ये शीश झुकाता हूँ।

# दो दृग में छुपा महानाद!

प्रद्युम्न तिवार
शोधार्थी (हिंदी विभाग

दो दृग में छुपा महानाद
भावों की सात्विक धारा
टकरा-टकरा कर कूलों
से बिफरा दर्द हमारा।

अपनापन रीति-रिवाज
विश्वासहीन हैं आँखें
जीवन की यौवनता में
निर्मूल हो गयीं शाखें

अड़चन है बेचैनी है
जीवन है तपन सरीखा
संधान स्वयं का करके
आराध्य मिलन है सीखा

वे वेद पुराण की बातें
हैं परम शिखर पर नाचें
निज अनुभव की वाणी से
हम दृश्य जगत का बाँचें

मन की अपनी उलझन है
आँखों के अपने सपने
घर की आवश्यकताएँ
सबके हैं सुख-दुख अपने

सब नियत जगत का खेला
जीवन की कठिन प्रणाली
इन हाथों से सब बन कर
ये हाथ न्यूनतम खाली।

# आजादी का आवाह्न

**सचिन चौधरी**
बी.ए. तृतीय वर्ष

"भारत में जैसी आजादी, बोलो कहाँ मिलेगी ?
बिन खेती भरपूर फसल, बोलो कहाँ पकेगी ?
लूटमार करो, देश-द्रोह, चाहे करो घोटाले,
उच्च श्रृंखला की आजादी, देखो कहाँ मिलेगी।"

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हम इस बार अपना 75वाँ गणतंत्र दिवस मनायेंगे, लेकिन अगर लगभग 70-72 साल पीछे जायें, तब हमें पता चलेगा किइस आजादी को पाने में न जाने कितनी माताओं की गोद सूनी हो गयी, कितने बच्चे अनाथ हो गये, कितनी स्त्रियों की माँग का सिंदूर उजड़ गया, पर वो वीर पीछे नहीं हटे और हमें आजादी दिला गये। किन्तु अगर हम देखें तो क्या आज हम आजाद हैं। हमें अंग्रेजों से तो आजादी मिल गयी, परन्तु गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, आतंकवाद ने अपना गुलाम बना लिया। कहने को तो कोई भ्रष्टाचार नहीं है, क्योंकि इसका तो स्वरूप ही बदल गया है। इसलिए मैं तो बस यही कहूँगा कि-

"भारत में अब पाप नहीं है, कोई भी भ्रष्टाचार।
कुछ भी लीजिए, कुछ भी दीजिए, अब है सब उपहार॥"

हमारा इतिहास गवाह है कि हम प्रारम्भ से ही शान्तिप्रिय रहे हैं, परन्तु फिर भी कुछ राष्ट्र हमसे ईर्ष्या करते हैं। उन्होंने बार-बार धोखे से हम पर कभी 1965 में वार किया, तो कभी 1971 में, कभी कारगिल में अपना चेहरा दिखाया, तो कभी कायरों की तरह संसद पर हमला किया। कहा भी जाता है कि आतंकवाद जहाँ से पनपता है, वह है पाकिस्तान। "जब हीथ्रो एयरपोर्ट पर विमानों को उड़ाने की कोशिश की गयी थी, तब उसमें वह पैसा काम में लिया गया था जो पाकिस्तान में आये भूकम्प के बाद पाकिस्तान को दान में दिया गया था।" हम गोधरा और अक्षरधाम का जख्म भूल भी नहीं पाये थे कि दिल्ली, मुम्बई बम धमाकों ने पूरे देश को हिला दिया। हद तो तब हो गयी जब मुम्बई के होटलों में घुस कर पूरी दुनिया को आतंकवाद का चेहरा दिखा दिया। हालांकि बाद में हमने भले ही जीत हासिल कर ली हो, पर आतंक के इस 'लाइव शो' ने दुनिया में हमारी जो छवि पेश की, वही हमारी हार है। अत: भारतीयों के लिए यही शब्द निकलते हैं कि-

सरदार पटेल सा होश है तुममें, राणा प्रताप सा जोश,
अब तो दुश्मन को धूल चटा दो, निकाल लो सारा रोष।
सब्र कर लिया, बहुत सह लिया, बहुत करवा ली बरबादी,
संसद भी अब नहीं सुरक्षित, है खतरे में पड़ी आजादी॥

कहते हैं कि जब अपना ही सिक्का खोटा हो तब लोहार का क्या दोष? मतलब देश की राजनीति की तरफ है। इतना कुछ होने पर भी सिर्फ बातों के युद्ध चल रहे हैं। देश की राजनीति का यह आलम है कि आज एक सिपाही भी यह सोचने पर मजबूर है कि वह सेवा अपने देश की करे या अपने परिवार की, क्योंकि वह जानता है कि उसके मरने के बाद उसके परिवार का क्या हाल होगा। अगर हम वास्तविकता देखें तो हम खुद अपनी नजरों में गिर जायेंगे, क्योंकि जहाँ एक ओर खेलों में जीतने वालों को करोड़ो रूपये उपहार में दिये रहे हैं, वहीं सरहद पर मरने वाले शहीद के परिवार को पेंशन के नाम पर सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते हैं। आज का आलम तो यह है कि जहाँ गरीब को मुश्किल से दो रोटी भी नहीं मिलती, वहाँ राजनेताओं के जन्मदिन के नाम पर करोड़ों रूपये खर्च किये जाते हैं। अत: इनके लिए तो यही शब्द निकलते हैं-

"जैसे तैसे मिल गई कुर्सी, कभी न इसको छोड़ेंगे,
पाँच साल के लिए हैं बैठे, मरने पर ही छोड़ेंगे।
बेवकूफ जनता समझे, कर रहे कल्याण देश का,
ये ठाठ से बैठे हैं, उड़ा रहे माल देश का।"

हालाँकि ऐसी बात नहीं है कि सभी राजनेता भ्रष्ट हैं, अभी भी सच्चे राष्ट्रनेता हैं, उन्हीं की वजह से आज हम हर क्षेत्र में तरक्की कर रहे हैं, चाहे वो चिकित्सा का हो, निर्माण का, कृषि का हो या विज्ञान का। यही कारण है कि "हमें भविष्य की दूसरी अर्थव्यवस्था कहा जाने लगा है।"

अत: अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि हम सभी को मिलजुल कर कार्य करना होगा। इस विषय में अपने साथियों से विशेष अनुरोध है कि अपने अन्दर सकारात्मक विचार रखें। हो सकता है कि मंजिल तक पहुँचने में कठिनाईयों का सामना करना पड़े।

"रहने दे आसमान, जमीं की तलाश कर,
सब कुछ यहीं है, न दिल को निराश कर।
हर आरजू पूरी हो तो, जीने का क्या मजा?
जीने के लिए बस, एक कमी की तलाश कर॥"

# रानी लक्ष्मीबाई – स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना

सविता
शोध छात्र (इतिहास विभाग)

भारत वीर सपूतों की भूमि है और यहाँ आजादी की लड़ाई में वीरों के साथ-साथ वीरांगनाओं ने भी अपना बलिदान दिया था। भारत की मिट्टी से होनहार, बहादुर सुत और सुता पैदा हुए हैं। भारत लगभग एक सदी तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। गुलामी की बेड़ियों को काटने के लिए हिंदुस्तान की वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इन वीरांगनाओं का त्याग और बलिदान इतिहास के सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। किसी ने फाँसी के फँदे को मुस्कुराकर गले से लगाया, किसी वीरांगना ने गोली खाकर तो किसी ने जहर खाकर ब्रिटिश हुकूमत के हाथ न लगने का अपना वादा निभाया और कईयों ने तो सारी जिंदगी जेल में रहकर अपना समर्थन दिया। ऐसी ही एक वीरांगना जिसके विषय में देश का बच्चा-बच्चा जानता है, के बारे में हम बात करने जा रहे हैं वह हैं झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई। जिन्हें ताकत एवं साहस का प्रतीक माना जाता है। सन् 1857 में झाँसी की रानी ने वक्त आने पर युद्ध के मैदान में उतरकर ब्रिटिश सेना का न केवल बहादुरी से सामना किया वरन् मराठा साम्राज्य सहित देश को भी सम्मान दिलाया।

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झाँसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में एक आदर्श वीरांगना थीं। सच्चा वीर कभी अपनी विपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्त्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार एवं उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्म विश्वासी, कर्त्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है, ऐसी ही थीं वीरांगना लक्ष्मी बाई। झाँसी की रानी भारतीय स्वतंत्रता के लिए आरंभ किए गए रण-यज्ञ की विशिष्ट 'होता' थीं। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास इन्होंने अपने रक्त से लिखा था। यह झलकारी बाई के बाद स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान होने वाली दूसरी वीरांगना थीं।

**लक्ष्मीबाई का प्रारंभिक जीवन—**

रानी लक्ष्मी बाई का जन्म '19 नवंबर 1828' को वाराणसी शहर के भदैनी नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था। धूमधाम के साथ लक्ष्मी का जन्मोत्सव मनाया गया। चिमा जी ने दिल खोलकर पैसे लुटाए। मोरोपंत जी ने भी यथाशक्ति राजा के दास-दासियों को उदारता पूर्वक दान-दक्षिणा दी। भीगीरथी बाई के पास जो भी एक-दो आभूषण थे, वे भी दासी को ही भेंट कर दिए गए। अच्छे-अच्छे पंडितों का शुभ आगमन हुआ। काफी उधेड़बुन के बाद पंडितों ने उस अपूर्व शिशु का नाम मणिकर्णिका रखा। धीरे-धीरे मणिकर्णिका बढ़ने लगी। क्योंकि अशिक्षित दास-दासियों से मणिकर्णिका शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं हो पाता था अत: प्यार से लोगों ने उसे मनु कहना प्रारंभ कर दिया। माता का प्यार मनु को अधिक दिनों तक नहीं मिल सका। वह छुटपन में ही पंत और मनु को छोड़कर अकस्मात इस संसार से चल बसी। वस्तुत: मनु अभी 4 साल की ही हुई थी

लेकिन कौन कह सकता था कि मनु 4 साल की है? उसके क्रियाकलापों को देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह 7-8 साल की लड़की होगी।

**मनु की शिक्षा एवं बचपन—**

मनु की शिक्षा घर पर ही हुई थी। वह पढ़ने-लिखने में तेज थी। बचपन से ही मनु स्वतंत्र प्रवृत्ति की थी। मनु बाजीराव के पुत्रों नाना, राव के साथ खेलकूद मनोरंजन करती थी वे तीनों भाई बहन की तरह रहते थे। खेल के साथ-साथ तलवार-बंदूक चलाना, अश्वरोहरण, मलखंब, कुश्ती, पढ़ना-लिखना आदि तीनों ने छुटपन से एक ही साथ सीखना प्रारंभ कर दिया क्योंकि बाजीराव के परिवार में भी बच्चियों का अभाव था, अत: बच्चों के साथ ही मनु अच्छी तरह घुल मिल गई। मनु बचपन से ही बेहद सुंदर थी। उनकी छवि मनमोहक थी, जो भी उनको देखता उनकी बात किए बिना नहीं रह पाता था। एक दिन प्यार भरे शब्दों में बाजीराव ने कह दिया-हमारी बिटिया तो छबीली मालूम पड़ती है, तब से सब के सब मनु को छबीली कहकर पुकारने लगे। लक्ष्मी बाई की बहादुरी के किस्से बचपन से ही प्रसिद्ध थे। वह बड़ी से बड़ी चुनौतियों को बड़ी समझदारी एवं होशियारी से सामना कर लेती थी।

एक बार जब वह घुड़सवारी कर रही थी। तब नाना साहब ने मनुबाई से कहा कि अगर हिम्मत है तो मेरे घोड़े से आगे निकलकर दिखाओ फिर क्या था। मनु ने नाना साहब की यह चुनौती स्वीकार कर ली और घुड़सवारी के लिए तैयार हो गई। नाना साहब का घोड़ा तेज गति से भाग रहा था, वहीं लक्ष्मीबाई का घोड़ा भी पीछे नहीं रहा, दौड़ के दौरान नाना साहब ने मनु से आगे निकलने का कई बार प्रयास किया लेकिन वह असफल रहे और इस रेस में घोड़े से नीचे गिर गए। इस दौरान नाना साहब की चीख निकल पड़ी 'मनु मैं मरा' इसके बाद मनु ने घोड़ा पीछे की ओर मोड़ लिया और नाना साहब को घोड़े पर बिठा कर घर की तरफ चल पड़ी। नाना साहब ने मनु की घुड़सवारी की बहुत प्रशंसा की और बोले मनु तुम घोड़ा बहुत तेज दौड़ाती हो, तुमने तो कमाल कर दिया। नाना साहब ने मनु को हिम्मती और बहादुरी कहा। इसके बाद नाना साहब और राव साहब ने मनु की प्रतिभा देखकर उन्हें शस्त्र विद्या भी सिखाई।

**रानी लक्ष्मीबाई का विवाह एवं राज्याभिषेक—**

लक्ष्मीबाई का विवाह लगभग 14 साल की उम्र में उत्तर भारत में स्थित झाँसी के महाराजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ। इस तरह काशी की मनु झाँसी की रानी बन गई। विवाह के बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई पड़ा। इनका वैवाहिक जीवन सुख से बीत रहा था। सन् 1851 में पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम दामोदर राव रखा गया। दुर्भाग्यवश दामोदर राव 4 माह ही जीवित रह सका जिससे उनके परिवार में संकट के बादल छा गए, वही पुत्र वियोग में महाराजा गंगाधर राव नेवालकर बीमार रहने लगे। लक्ष्मी बाई और महाराजा गंगाधर राव ने अपने रिश्तेदाार का पुत्र को गोद लेने का फैसला किया। गोद लिए पुत्र के उत्तराधिकार पर ब्रिटिश सरकार कोई दिक्कत न करे इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार की मौजूदगी में पुत्र को गोद लिया। यह काम ब्रिटिश अफसर एलिस की मौजूदगी में पूरा किया गया। 'गंगाधर राव ने स्वयं अपने हाथ में खरीता लिया और निमिष दृष्टि से एक बार एलिस की ओर देख कर उसके हाथ में खरीता थमा दिया।' गोद लिए गए बच्चे का नाम पहले आनंद राव रखा गया परंतु बाद में बदलकर

दामोदर राव रख लिया गया। लगातार बीमार रहने के चलते 1 दिन महाराज गंगाधर राव नेवालकर की तबीयत ज्यादा खराब हो गई और 21 नवंबर 1853 को उनकी मृत्यु हो गई इस समय रानी लक्ष्मीबाई महज 25 वर्ष की थी। पुत्र वियोग के बाद राजा की मृत्यु की खबर ने रानी को बहुत आहत किया। लेकिन इतनी कठिन परिस्थिति में भी रानी ने धैर्य नहीं खोया। वही दत्तक पुत्र दामोदर राव की आयु कम होने की वजह से उन्होंने स्वयं ही राज्य का उत्तराधिकारी बनने का फैसला किया। उस समय लॉर्ड डलहौजी गवर्नर था परंतु रानी को उत्तराधिकारी बनने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। वही ब्रिटिश शासकों ने राजा गंगाधर राव नेवालकर की मौत का फायदा उठने की तमाम कोशिशें की क्योंकि वे झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार ने झाँसी राज्य को हड़पने की हर कोशिश कर ली। यहाँ तक कि ब्रिटिश शासकों ने महारानी लक्ष्मी बाई के दत्तक पुत्र दामोदर राव के खिलाफ मुकदमा दायर कर दिया। यहाँ के निर्दयी शासकों ने रानी के राज्य का खजाना भी जब्त कर लिया। इसके साथ ही राजा नेवालकर ने जो कर्ज लिया था उसकी रकम रानी लक्ष्मीबाई के सालाना आय से काटने का फैसला सुनाया। इसके लिए उन्हें झाँसी का किला छोड़कर झाँसी के रानी महल में जाना पड़ा। इस कठिन संकट से भी रानी लक्ष्मी बाई घबराई नहीं और वह अपने झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासकों के हाथ सौंपने नहीं देने के फैसले पर डटी रही। अपने राज्य को बचाने के लिए लक्ष्मीबाई ने सेना संगठन शुरु कर दिया।

**साहसी रानी के संघर्ष का आरंभ—**

झाँसी को पाने की चाह रखने वाले ब्रिटिश शासकों ने 7 मार्च 1854 को एक सरकारी गजट जारी किया, जिसमें झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का आदेश जारी हुआ था। जिसके बाद लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश शासकों के इस आदेश उल्लंघन करते हुए कहा कि 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।' इसके बाद ब्रिटिश शासकों के खिलाफ विद्रोह तेज हो गया। झाँसी को बचाने के लिए लक्ष्मीबाई ने कुछ अन्य राजाओं की मदद से सेना तैयार की, जिसमें बड़े पैमाने पर लोगों ने अपनी भागीदारी निभाई। इस सेना में सहेली-सेना के रूप में महिलाएँ भी शामिल थीं। लक्ष्मीबाई की सेना में अस्त्र-शस्त्र के विद्वान गुलाम खान, दोस्त खान, खुदा बख्श, काशीबाई, मोतीबाई सुंदर-मुंदर, लाला भाऊ बक्शी, दीवा रघुनाथ सिंह, दीवान जवाहर सिंह, जूही, दूल्हाजू, झलकारी बाई समेत 1400 सैनिक शामिल थे।

**1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महारानी लक्ष्मी बाई—**

10 मई सन् 1857 को अंग्रेजों के खिलाफ जगह-जगह विद्रोह शुरु हो गए। इसका कारण बंदूकों की गोलियों में सूअर और गौमास की परत चढ़ा दी गई और जिसके बाद हिंदुओं की धार्मिक भावनाएँ काफी आहत हुई इसी वजह से पूरे भारत में आक्रोश फैल गया। जिसके बाद ब्रिटिश सरकार को विद्रोह को दबाना पड़ा और झाँसी को महारानी लक्ष्मीबाई को सौंप दिया गया। सन् 1857 में झाँसी राज्य के पड़ोसी राज्य ओरछा और दतिया के राजाओं ने झाँसी पर हमला कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी बहादुरी एवं चतुराई का परिचय देते हुए जीत हासिल की।

**1858 में झाँसी पर अंग्रेजों का अधिकार—**

मार्च 1858 में एक बार फिर झाँसी राज्य पर कब्जा करने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने सर ह्यूरोज के नेतृत्व में

आक्रमण किया, लेकिन इस बार झाँसी को बचाने के लिए तात्या टोपे के नेतृत्व में करीब 20000 सैनिकों के साथ लड़ाई लड़ी गई। इस लड़ाई में अंग्रेजों ने झाँसी के किले की दीवारें तोड़कर यहाँ पर कब्जा कर लिया, साथ ही झाँसी में लूटपाट भी की। इस संघर्ष में रानी ने साहस से काम लिया, सर्वप्रथम अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को बचाया एवं स्वयं भी बच निकलने में सफल हो गई। रानी झाँसी से भागकर कालपी पहुँची और तात्या टोपे से मिली।

**कालपी एवं ग्वालियर पर अंग्रेजों का अधिकार—**

सन् 1858 में झाँसी पर अंग्रेजो द्वारा कब्जा करने के बाद लक्ष्मी बाई अपने दल के साथ कालपी पहुँची जहाँ तात्या टोपे ने उनका साथ दिया। कालपी के पेशवा ने बिगड़ते हालात देखकर रानी को कालपी में शरण दी एवं सैन्य बल भी दिया। 22 मई 1858 को सर ह्यूरोज ने कालपी पर भी आक्रमण कर दिया। यहाँ रानी ने अपने साहस और वीरता के साथ अंग्रेजों को हार की धूल चटाई। जिसके बाद अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। अपनी हार के कुछ समय बार सर ह्यूरोज ने कालपी पर पुनः आक्रमण कर दिया एवं जीत हासिल की। कालपी की लड़ाई में हार के बाद राव साहब पेशवा, बंदा के नवाब, तात्या टोपे व अन्य मुख्य योद्धाओं ने महारानी बाई को ग्वालियर पर अधिकार करने का सुझाव दिया और महारानी बाई ने अपनी मंजिल में सफलता के लिए तात्या टोपे के साथ मिलकर ग्वालियर के महाराज सिंधिया के खिलाफ लड़ाई की जो कि एक अंग्रेज भक्त था। इस युद्ध में तात्या टोपे ने ग्वालियर की सेना को पहले ही अपनी तरफ मिला लिया, वहीं दूसरी ओर अंग्रेज भी अपनी सेना के साथ ग्वालियर आ धमके। लेकिन रानी ने इस लड़ाई में ग्वालियर के किले पर जीत हासिल की। किंतु बाद में उन्होंने ग्वालियर का राज्य राव साहब पेशवा को सौंप दिया।

**रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु—**

17 जून 1858 में रानी लक्ष्मीबाई ने किंग्स रॉयल आइरिस के खिलाफ लड़ाई लड़ी और ग्वालियर के पूर्व क्षेत्र में मोर्चा संभाला। अंग्रेज अधिकारी स्मिथ ने लड़ाई का बिगुल बजाया। लड़ाई प्रारंभ हो गई। स्मिथ की सेना आगे बढ़ने लगी। लक्ष्मीबाई ने गोलंदाज को चुप रहने का संकेत दिया। गोरी पलटन बढ़ती रही और अधिक बढ़ने का मौका दिया गया। उसे पूर्ण विश्वास हो गया आज ही शहर पर कब्जा किया कर लिया जाएगा। टोरियो के पीछे एक तोपखाना लगा था। तोपखाने से गोली की वर्षा करने के लिए जूही वहाँ पर मौजूद थी। रानी ने आज्ञा दी, मुहरा को थोड़ा ढीला करो फिर क्या। गोरी सवार धरती पर बिछ गए। पैदल पलटन भी अधिक संख्या में मारी गई। सवारों का दूसरा दल आया। समाप्त! फिर तीसरा दल आया वह भी समाप्त। इस प्रकार दल पे दल आते रहे और धीरे-धीरे धरती पे बिछते गए। पल भर में ही गोरी पलटन ने मैदान खाली कर दिया और स्मिथ को पहले दिन काला मुँह लेकर लौटना पड़ा।

18 जून 1858 यह युद्ध का दूसरा दिन था। प्रथम दिन ही हार के कारण अंग्रेज जनरल आज बहुत सावधान थे। ह्यूरोज ने अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। आज ग्वालियर पर चारों तरफ से आक्रमण किया गया किंतु पूरब की ओर सबसे अधिक तैयारी थी। अगले दिन भी जूही की तोपे गजब ढा रही थीं। न जाने कितने गोरे सवार आए और मरे, मरते रहे, फिर आए और फिर

मरे, मरते रहे.....। तभी एकाएक तोपों पर गोलों की वर्षा हुई। तोपों के मुँह बंद हो गए। जूही को तलवार लेकर युद्ध करना पड़ा किंतु लड़ते-लड़ते यह वीरांगना भी मारी गई। रानी को मालूम हुआ कि ग्वालियर सेना एवं सेनापति अंग्रेजों के साथ मिल गए। राव साहब भी अपने मोर्चे को छोड़कर धीरे-धीरे पीछे हट रहे और तात्या टोपे का भी यही हाल है। रानी को बोध हुआ-तात्या टोपे और राव साहब की विलासिता ने सब को नष्ट कर दिया, किंतु तत्क्षण उन्होंने क्रोधावेश पर नियंत्रण किया और उनकी भूलों को आशीर्वाद लेकर आगे बढ़ी। युद्ध में रानी के साथ उनकी सेविकाओं ने उनका साथ दिया। इस युद्ध में रानी का घोड़ा नया था क्योंकि पिछले युद्ध में रानी का घोड़ा 'राज रतन' मारा गया था। रानी को अंदेशा हो गया था कि यह युद्ध उनके जीवन की आखिरी लड़ाई है। गुल मोहम्मद, रामचंद्र देशमुख और रघुनाथ सिंह अपनी-अपनी तलवार की अंतिम करामात दिखला रहे थे। रानी की छोटी सी टुकड़ी हजारों गोरी पलटन के द्वारा घेर ली गई। आगे-आगे रानी बगल में मुंदर, मुंदर के बगल में रामचंद्र देशमुख और रघुनाथ सिंह रानी के बगल में। गुलाम मोहम्मद रानी के पीछे और उसके लाल कुर्ती सवार। सभी अटूट शौर्य के साथ दुश्मनों को अपनी तलवार से कतरते जा रहे थे। मुंडर के सीने में गोले लगे और वह महारानी लक्ष्मीबाई की जय का उद्घोष करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुई। तभी झटके से आकर एक अंग्रेज सवार ने महारानी के सर पर वार किया, सिर पर दाईं ओर का हिस्सा कट गया और दाईं आँख बाहर निकल पड़ी। आश्चर्य! तब भी रानी ने उस घातक पर अपनी तलवार चलाई और उसके दो टुकड़े कर दिए। आँखों से महारानी ने स्वयं उसे देखा। युद्ध में रानी बुरी तरह घयल हो चुकी थी और घोड़े से गिर गई। रानी ने पुरुष की पोशाक पहने हुई थी इसलिए अंग्रेज उन्हें पहचान नहीं पाए और रानी को युद्ध भूमि में ही छोड़ गए। इसके बाद रामचंद्र और रघुनाथ सिंह, रानी और मुंदर के मृत शरीर को अंतिम संस्कार के लिए गंगादास मठ में ले गए "बाबा गंगा दास ने महारानी के पवित्र शरीर को गंगाजल से अभिसंचित किया।" उन्होनें मुख के संकेत से गंगाजल की याचना की....। 'बाबा गंगादास ने महारानी को अंतिम बार गंगा जल पिलाया और तभी 29 वर्षीय उस दुर्गा, काली, लक्ष्मी व महामाया की अंतिम वाणी निःसृत हुई'।

*हर हर महादेव। ओ३म्.....।*

पर्णकुटी की लकड़ी से महारानी का अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। रानी के बगल में ही मंदर भी चिर निद्रा में सो गई। रानी के मरते ही अंग्रेजों ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। 'युद्धकी रिपोर्ट में ब्रिटिश जनरल ह्यूरोज ने टिप्पणी की कि "रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुंदरता, चतुराई एवं दृढ़ता के लिए उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी।"

रानी लक्ष्मीबाई ने एक स्त्री होकर भी पुरुषों की भाँति अंग्रेजों से लड़कर उनकी हालत खराब कर दी थी और उन्हें बता दिया कि तुम अंग्रेजों के लिए एक महिला की काफी है। वह मृत्यु पाकर भी अमर हो गई और स्वतंत्रता की ज्वाला को भी अमर कर गई। उनका बलिदान आज भी भारतीयों में स्व स्फूर्ति और नव चेतना का संचार करता है।

# भगवान

**अंकित**
एम.ए. प्रथम (इतिहास)

1. अजब हैरान हूँ भगवान
तुझे कैसे रिझाऊँ मैं
कोई वस्तु नहीं ऐसी
जिसे तुझ पर चढ़ाऊँ मैं
भगवान ने कहा: संसार की हर वस्तु
तुझे मैंने दी है।
तेरे पास अपनी चीज सिर्फ
तेरा अहंकार है,
जो मैंने नहीं दिया
उसी को तू मुझे अर्पण कर दे।
तेरा जीव सफल हो जाएगा।

2. रोज तारीख बदलती है।
रोज दिन बदलते हैं
रोज अपनी उमर भी बदलती है
रोज समय भी बदलता है
हमारे नजरिये भी वक्त के साथ बदलते हैं
बस एक ही चीज है
जो नहीं बदलती
और वो मैं हम खुद और
बस इसी वजह से
हमें लगता है कि
अब जमाना बदल गया है॥

# बेटियाँ

**आरती**
एम.कॉम. प्रथम

बेटियाँ नहीं बेटो से कम
बेटियाँ बेटो से भी महान्
बेटियों से जरीये जमी है
बेटियाँ नहीं बेटों से कम।
बेटी बेटों से भी महान्
बेटियों को न गर्भ में मारो
इन को दे दो जीवन दान
पहले बाबुल फिर ससुराल
इन से बढ़े दो कुल की शान
बेटियाँ नहीं बेटों से कम
बेटी बेटों से भी महान्।

# नारी

गीता चौधरी
बी.ए. तृतीय वर्ष

**किन शब्दों में दूँ परिभाषा**
**हर शब्द तुमसे छोटा लगता है।**
**सरस्वती सी ज्ञान की गंगा,**
**लक्ष्मी का भण्डार तुम्ही हो।**
**सुबह की बेला, दिन की धूप,**
**गोधूलि की शाम तुम्हीं हो।**
**थके पथिक की अंकशायनी,**
**रात्रि का विश्राम तुम्ही हो।**

आज नारी विमर्श का दौर है। नारी को लेकर संसार में एक आन्दोलन है, एक हलचल है। अपने-अपने विचारों, तरीकों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से नारी का महिमामण्डन किया जा रहा है। 'नारी-सशक्तिकरण' की यह लहर कितनी वास्तविक व प्रभावी है, यह तो आने वाला कल ही बतायेगा। किन्तु वह 'नारी' जो आदिकाल से मनुष्यता के इतिहास की प्रधान नायिका है, जिसकी गौरवगाथा से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। कवियों की दृष्टि में जो 'नारी' माया सी निर्बोध, प्रकृति सी बहुरूपा और सहानुभूति सी सरल रही है। जो शक्ति है, धरा है, श्रद्धा है, पूजा है, जीवनदायिनी है, सहचरी है और अर्द्धांगिनी है। जो अपूर्ण में पूर्ण है, जिसकी मुस्कान में सृजन है, जिसकी आह में प्रलय है। आखिर वह जगत निर्मात्री कब, क्यों और कैसे इतनी अबला, निरोह व शक्तिहीन हो गई कि आज उसके 'सशक्तिकरण' के लिए एक आन्दोलन की आवश्यकता आ खड़ी हो गई।

शायरों ने औरत की शान में कसीदे लिख-लिख कर दीवान भर दिए हैं, लेकिन वो ओरत है कहाँ ?

किस औरत की बात करें ? जिसे जिन्स समझ कर राजाओं ने रनिवास में सैकड़ों की संख्या में रानियाँ बनवाकर रख लिया, या उस औरत (अहिल्या) की जो कभी पत्थर की शिला बन गई, या फिर उस 'सीता' की जिसने अकारण ही एक के बाद एक वनवास झेला और फिर धरती में समा गई या फिर उसकी जिसकी (द्रौपदी का) चीरहरण हुआ तब आँखें तो झुकी, मुँह बंद रहे, पर नियम नहीं बदले। वही नियम जो सदियों से केवल स्त्रियों के लिए बने हैं। कैसी विडम्बना है कि सदियाँ बीत गईं, युग बदल गए, नहीं बदली तो केवल नारी की स्थिति। आज भी वही कठोरनियम, मर्यादाओं की बेड़ियाँ, इज्जत का वास्ता, दहलीज की बंदिश और एक अन्तहीन शून्यता का दर्द, ज्यों का त्यों है।

वास्तविकता तो यही है कि दर्द की सलीब पर टंगा हुआ एक शब्द है 'औरत'। पीड़ा है, दर्द है, हँसती आँख और आँसू है औरत।

नारी 'सशक्तिकरण' एवं 'नारी उत्थान' के लिए आवश्यकता किसी आन्दोलन की नहीं बल्कि संवेदनाओं की है। स्त्री की भूख लफ्जों की भूख है, कुबोलों के बीच दो प्यार भरे रसीले बोलों के लिए उसके कान तरसते हैं। प्याज के अल्फाज, सम्मान के शब्द, एक अपनेपन के अहसास की उसे जरूरत है। उसे चाहिए अस्मिता, सार्थकता, सहजता, सम्पूर्णता, सम्प्रभुता। अपने होने का अहसास। उसे चाहिए वह सब जो उसे अनुभव कराये कि वह 'निष्प्राण' नहीं 'चेतन' है। उसकी भी इच्छायें हैं, आकांक्षायें हैं। ये जमीन और ये आकाश उसका भी है, उसके लिए भी हैं।

# पिता

**मीनाक्षी**
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता ॥
जन्म दिया है अगर माँ ने,
जानेगा जग जिससे वो पहचान है पिता
कभी कंधे पे बिठाकर मेला दिखाते हैं पिता,
कभी बनके घोड़ा घुमाते है पिता।
माँ अगर पैरों पर चलना सिखाती है,
तो पैरों पे खड़ा होना सिखाता है पिता
कभी रोटी तो कभी पानी है पिता
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता ॥
माँ अगर मासूम सी लोरी,
तो कभी न भूल पाऊँगी वो कहानी है पिता ॥
कभी हँसी तो कभी अनुशासन है, पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता ॥
माँ अगर रसोई है, तो चलता है, जिससे घर का राशन है पिता ॥
कभी ख्वाब को पूरी करने की जिम्मेदारी है पिता
कभी आँसुओं में छिपी लाचारी है पिता।
माँ अगर बेच सकती है, जरुरत पर गहने,
तो जो बेच दे वो व्यापारी है, पिता।
कभी हँसी और खुशी का मेला है पिता।
माँ तो कह देती है, अपनेदिल की बात
सब कुछ समेट के आसमान सा फैला है, पिता ॥

# समय

**पूजा सिंह**
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

समय बड़ा बलवान।
टिक न सका इसके आगे।
बड़े-से-बड़ा धनवान।
समय बीत जाने पर ॥
तुम बहुत पछताओगे।
इतना अच्छा समय भला ॥
तुम दोबारा कब पाओगे।
समय बीत जाने पर इन्सान ॥
बहुत पछताता है।
व्यर्थ बिताया गया समय ॥
भला कौन कहाँ कब पाता है ?
जो नहीं पहचानते हैं समय का मोल ॥
कर नहीं पाते कोई भी अच्छा काम।
नहीं कर पाते वो जग में ऊँचा अपना नाम ॥
अगर जीवन में कुछ करना है।
सबसे आगे बढ़ना है ॥
तो समय के महत्व को पहचानो।
और बढ़ाओ अपना मान ॥

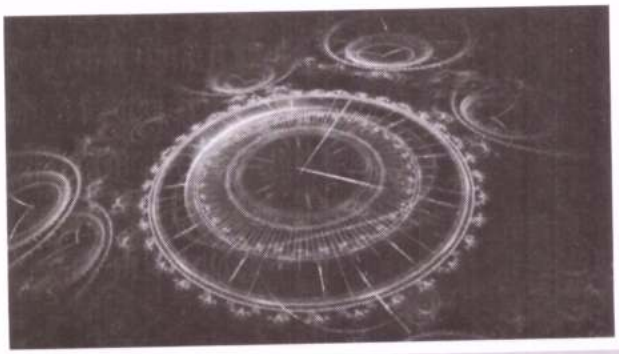

# देश भक्ति और राष्ट्र निर्माण

**कीर्तिका सिंह**
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

*शास्त्री का शास्त्र है, राष्ट्र के निर्माण में,*
*सुभाष का बलिदान है, राष्ट्र के निर्माण में,*
*भगत सिंह की वीरता है, राष्ट्र के निर्माण में,*
*लौह पुरुष के विचार भी हैं, राष्ट्र के निर्माण में,*
*खाकी की वो मेहनत है, राष्ट्र के निर्माण में,*
*प्रजा का हर कृत्य भी है, राष्ट्र के निर्माण में,*
*किस-किस का नाम कहूँ मैं, इस राष्ट्र के निर्माण में,*
*राष्ट्र के निर्माण में.....*

राष्ट्र के निर्माण में हर एक व्यक्ति जो इसका प्रतिभागी हैं, हर वो नर, वो नारी, हर एक वो जीव जिसका प्रेम उसके देश के लिए, उसकी मिट्टी के लिए तत्पर है।

देश भक्ति क्या है ? राष्ट्र प्रेम क्या है ?
क्या वो बस किताबों के दीमक लगे पन्नों में है।
नहीं..... बिल्कुल नहीं।

देश भक्ति वो भक्ति है जो एक शुद्ध ब्राह्मण अपने प्रभु अपने स्वामी से करता है। बिना किसी मोह, बिना किसी लालच के वो अपने प्रभु की भक्ति-भाव में लीन रहता है। वैसे ही एक देशभक्त अपने देश के लिए उसके मान-सम्मान की रक्षा करता है, भक्ति करता है। वो अपने देश में लीन हो जाता है।

सिर्फ सीमाओं पर ही देशभक्त नहीं होते देशभक्ति विचारों से पैदा होती हैं और उस भक्त का हर एक पग राष्ट्र के निर्माण से जुड़ा होता है।

यही निष्ठा हमें किसी भी युद्ध या किसी भी आपातकालीन परिस्थिति में देश की रक्षा करना सिखाती है।

जैसे "लौह पुरुष" "सरदार वल्लभ भाई पटेल जी" जिन्होंने वैसे तो देश के लिए कई ऐसे कार्य किए जो नि:सन्देह देश प्रेम ही था। परन्तु उनका एक योगदान ऐसा था जो न तो भूला जा सका और न ही कभी भूला जाएगा। हमारे राष्ट्र का, हमारे भारत का, हमारी इस धरती माँ, इस मिट्टी का 'एकीकरण' जो कि उन्होंने किसी सीमा पर खड़े होकर नहीं, किन्तु अपने मस्तिष्क अपने विचारों से अपने लोगों के विचारों को अपने विचारों से 'न्यूनाधिक' किया। इस बात से यह प्रकट होता है कि देश भक्ति और देश प्रेम किसी भी शैली में की जा सकती है।

हर क्षण बीज लगाएँगे,
बूँदे हर बरसाएँगे,
जब तब पेड़ बनेगा उसका,
हर देश भक्त बन जाएँगे।

हमारे इस राष्ट्र के निर्माण में कई महान व्यक्तित्वों का सहयोग रहा हैं। जिन्हें स्मरण कर जाने क्यों आँखे छलक ही उठती हैं। जिन सभी का विवरण देना तो सूक्ष्म पंक्तियों में असम्भव है। परन्तु उन महान व्यक्तित्वों का नमन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी जानी चाहिए।

'देश भक्त', 'राष्ट्र भक्त' परिभाषाओं में अलग हो सकता हैं, उनका अर्थ भिन्न हो सकता है, किन्तु भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ देश, राष्ट्र और ध्वज तीनों का अर्थ एक ही माना गया है।

जिस देश में गाय को माता माना गया है, उस देश की उपाधि प्रजा की नजरों में क्या ही होगी ये तो आप स्मरण कर ही सकते हैं।

*गौ माता का मान करें,*
*धरती जग-मग जग-मग होए,*
*एक मिट्टी की पूजा में,*
*जन भर तिलक सुहाए,*
*लाल वस्त्र जब पूजा जाए,*
*देवी माँ के चरणों में,*
*लाल रक्त का तिलक लगाए,*
*माँ वीरों के चरणों से,*
*माँ की आँखें छन भर को तब भी मन ना होए,*
*वीरों की उस टोली में, दूजा पुत्र भी। जाए.....*

ये इस मिट्टी की ही वीरता है, जहाँ पर बालक भी बहादुर ही जन्म लेता है। बालक बाल शिवाजी है और वह माता महारानी जीजा बाई। जो बाल शिवाजी जन्म से ही बहादुर और वीर थे। राष्ट्रीयता का देश प्रेम का एक यह उदाहरण भी है कि नारी या नर में से सिर्फ नर ही राष्ट्र के लिए कर्त्तव्य पूर्ण रहे अपितु नारी का पूरा कर्त्तव्य होता है कि वो अपने देश की सेवा करे।

माता जीजाबाई ने भी अपने कर्त्तव्यों को अपने संस्कारों को अपने ढंग से देश के लिए न्यौछावर किया। माता जीजाबाई का सारा जीवन साहस और त्याग से भरा हुआ था। उनके परिश्रम और उनके द्वारा दिये गए संस्कारों से ही वीर छत्रपति शिवाजी द्वारा हिन्दवी स्वराज्य मराठा साम्राज्य की नींव रखी गई थी।

एक माता और एक महिला के गुणों का वर्णन इस अनुच्छेद की पहली पंक्ति से ही कर दिया गया था। अब ये आपका उत्तरदायित्व हैं कि आप जीवन में इतिहास पढ़ना चाहते हैं या इतिहास लिखना चाहते हैं, किन्तु अस्तित्व देश प्रेम, संस्कार और परिश्रम से बनते हैं। 60 सेकेण्ड के भौंडे नृत्यों वाले चलचित्रों से नहीं....
वीर बनो या शस्त्र बनो खुद को कब तक अबला बनोगी, शस्त्र बनो या शास्त्र बनो या तुम भी गुम-सुम रह लोगी, My Life और My Choice की माला जपती रहती हो, जीवन का ब्रह्मास्त्र बनो कि बिन बोले सब कुछ कह लोगी।

कहने वाले कहते हैं, कि राष्ट्रीयता और देश भक्ति, पहले विश्व युद्ध या कुछ दशकों से ही पनपे हैं, पर हमारी तो संस्कृति, राष्ट्र धरोहर, 'इतिहास' रामायण के महापुरुष, युग पुरुष, प्रभु राम में भी राष्ट्रीयता की झलक देखी गई थी। रावण वध के उपरान्त लंकापति के रिक्त स्थान होते है। लंका की चका-चौंध देखकर प्रभु लक्ष्मण ने अपने भ्राता राम से यह कहा कि यह सोने की लंका है भैया, अब हमें इसे जीत कर यही बस जाना चाहिए इसके प्रतिउत्तर में मेरे आराध्य प्रभु राम ने कहा कि ये सोने की मिट्टी चाहे बहुमूल्य हो..... पर मेरी मातृभूमि से ज्यादा अनमोल नहीं है जो प्रेम मुझे मेरी

मिट्टी और मेरी प्रजा मुझे दे सकती है, वो ये चटक पत्थर और यहाँ के सेवक नहीं दे सकते, हम अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए आए थे। किसी अन्य देश पर लूट, आक्रमण व सभ्यता नष्ट करने नहीं।

*मर्यादा पुरुषोत्तम के सिंहासन पर वो बैठे हैं,*
*मेरे आराध्य, मेरे प्रभु वन में एकाकी रहते हैं,*
*इसका कोई संदेह नहीं कि दु:ख उनको न होता हो,*
*एक निर्णय पर माता की उन्होंने राज-पाठ सब त्यागा हो*
*फिर भी लंका छोड़ दिया और वापस आना चाहते है,*
*देश भक्त का चिन्ह यही है, राष्ट्रीयता दशको से देखी जाती है।*

मैं क्षमा प्रार्थी हूँ अगर मैंने 23 वर्ष की आयु में अमर हुए भगत का वर्णन या स्वामी विवेकानन्द जिन्होंने 1893 में विदेशी भूमि पर भारत का नेतृत्व किया या शास्त्री जी जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में स्वतंत्र भारत से, पाकिस्तान पर विजय ध्वज फहराया व पहली बार दुग्ध क्रान्ति लाए, या किरन बेदी उपनाम 'करेन बेदी' जो नारी की एक ऐसी पहचान हैं जिसको मैं राष्ट्रीयता का सटीक उदाहरण कह सकती हूँ, वह कई आई.पी. एस. में से एक और पहली महिला अफसर थी। उन्होंने अपने कर्त्तव्य, कर्म और उत्तरदायित्व को सर्वोच्च रखा और उस समय की प्रधानमंत्री "श्रीमती इंदिरा गाँधी" की गाड़ी क्रेन से उठवा ली जो कि NO PARKING पर खड़ी थी। वह भी सिर्फ अपने उत्तरदायित्व के लिए।

भारत महान देश, भारत महान ऐसे ही नहीं हुआ है न जाने कितने ही वीर पुरुष वीरांगनाओं और महापुरुषों के जीवन न्यौछावर करने से ही देश महान हुआ है। अब मैं उन सबके हर एक के नाम पर कैसे कविताएँ लिखूँ, निबंध लिखूँ या छंद लिखूँ। जैसे महामारी काल में सहायता करते चिकित्सक या फिर सीमा पर खड़े सिपाही या उनकी चिट्ठी लाते डाकिया या सबकी सुरक्षा करती पुलिस या दफ्तर में बैठा कोई बाबू या मैं बखान करूँ अनाज उगाते उन किसानों का या न्यायालय के न्यायाधीश।

यही सब में पूजनीय है और आप ही लोग देश प्रेम और राष्ट्रप्रेम की एक नई परिभाषा होंगे।

तो मैं अब इस लेखन का निष्कर्ष एक कविता के माध्यम से दे रही हूँ.....

*धर्म से और कर्म से मनुष्य के पराक्रम से,*
*हर क्षण में हर श्रम में,*
*महामारी के हर एक छन में,*
*हर एक वो व्यक्ति वीर बना,*
*सहायक था जो उस दर्द में,*
*संस्कारों में और व्यवहारों में,*
*राष्ट्रीयता का दीप झलक रहा अंधियारों में,*
*राष्ट्रीयता है हर धर्म में,*
*जीवन के हर कर्म में,*
*समझो इस कर्त्तव्य को,*
*जो कण-कण है अपने रक्त से.....*

# DEVELOPMENT IN THE COMMUNICATION METHOD

**Pankaj Sharma**
HOD, BCA Computer Deptt.

Communication has been an essential part of our lives since the beginning. It develops understanding among people. The Development of Communication is an ongoing process. Humans have been using different methods to communicate from the beginning. Let's have a look at the history of human communication briefly.

**1. Cave Paintings:**

Cave Paintings are the oldest methods of communication. They were used to mark territories. Major events were also recorded through these paintings. They are usually found on the walls and ceilings of caves. Symbolic as well as religious functions were shown in these paintings. Chauvet Cave in France has the oldest cave painting. That painting was made around 30,000 B.C. South Sulawesi, Indonesia, and Coliboaia Cave in Romania have the earliest cave paintings

**2. Symbols for Communication:**

Different signs and symbols were used to deliver messages. Rock Carvings (Petroglyrjhs) were introduced in 10,000 B.C. These rock paintings drew pictures to convey stories. The carvings on the rock surface were also known as Rock Art. Later on, graphic symbols were used to present ideas or concepts. Chinese created characters for communication as well. Alphabets were created at the last. The Development of communication was easier after the alphabet.

**3. Smoke Signals:**

These signals were used to send messages. They were mostly used in China. Chinese guards released smoke into the air. Smoke is depicted as a message to The Great Wall of China. A famous Greek Historian Polybius used smoke signals to represent the alphabet.

**4. Carrier Pigeons:**

Pigeons are known well for their directions. They were known to find their home, even after traveling long distances. People used to attach small letters to their necks, hoping they would fly to the receiver. Pigeons were also used by Ancient Romans to tell owners

how their entries had been placed. They carried essential messages and helped in the Development of communication.

**5. Postal System:**

With rising awareness, people started to use. courier services. Letters were delivered from one person to another through postal services. These systems were organized in India, China, Persia, and Rome. A Frenchman De Valyer started postal system in 1653. The use of mailboxes and delivery of letters was done through the system.

**6. Newspapers:**

Newspapers are still a wide form of communication used. Every other house has a newspaper delivery every day. These papers deliver written news and also other important national events taking place. Two types of Newspapers are National and International. Their types depend upon the news they deliver about. The first printing press system was introduced in 1440 by German Johannes Gutenberg. The newspaper started to get more attention and changed communication forever.

**7. Radios:**

With the advent of Print Media, Radios were introduced after that. Radios are a source of news as well as entertainment for people. Wireless signals were studied and tested in detail. The scientists practiced using wireless power to share content. Radios are still installed in mobile phones and car stereo systems. They were once a very important medium of communication.

**8. Telegraph:**

The first electrical communication system to send text messages was called Telegraph. Sending letters required energy and patience to wait for a reply. Telegraphs were introduced to send text messages more quickly than written messages. It helped in sending information across the country.

**9. Telephone:**

The first telephone was introduced by Alexander Graham Bell in 1876. Within 50 years of its invention, telephones became an essential part of every household and office. The devices transmitted human audio into signals. These signals were then transmitted through wires. Landline telephone service began in the 1900s. People could talk on calls for hours through long distances. It was the most reliable form of the communication

system. Mobile phones were introduced in 1973 and the mode of communication was changed entirely.

**10. Television:**

Even today, Televisions are a great source of entertainment. They are a mode of indirect communication to a larger audience. Many people in history put in tremendous efforts to introduce Television. The early Television displayed black and white pictures after World War II. But with the advancement, colors were added to the screen. Today, there are several features in Television that provide us with more entertainment and information.

**11. Internet:**

The world of the Web has brought people closer. Tim Berners-Lee invented the World Wide Web in 1990. Satellites support the internet. Through the internet, we can search for anything, anywhere in the whole world. Wireless connections via Wi-Fi began in 1991. Since then, people seem to be addicted to the internet. Nowadays, every small activity of our lives, business, and education involves the use of the internet. We highly depend upon the internet for our development as a nation as well as a generation.

**12. E-mail:**

Microsoft Business Email is the most formal way of communication used in offices. John Vittal 1975 developed software to support mail. Since that invention, many mailing platforms have been created. E-mails are better for record-keeping and cost-saving.

**13. Text Message:**

Various network providers are used for sending text messages. The first text message was sent by Neil Pap worth, an engineer, in 1992. From that day to now, text messaging has been a game of a few minutes. People instantly chat through text messages. With advanced internet, online messaging apps have been introduced. These applications help connect people. They share texts through the internet.

**14. Social Media:**

People share their entire life events on social media. Social media platforms help people share pictures, videos, and almost everything on the internet. It is the latest mode of communication in the digital world. Smart phones have made this more convenient. Social media

apps can be downloaded to smart phones. Users of social media in this generation are obsessed with these platforms. They share the daily smudge of their lives on these apps. Social media has revolutionized the way we communicate. We can see what other people are doing through their social media profiles. It is now easy to check up on your friends who live far.

Communication has been made a lot easier. Distance is not an issue anymore. You can talk to any person you want, either living far or near. Better communication has helped us gain better social skills. From verbal speech to our text messages, we communicate about life each day. A feature of privacy through end-to-end has been added to our daily communication through cell phones and other gadgets.

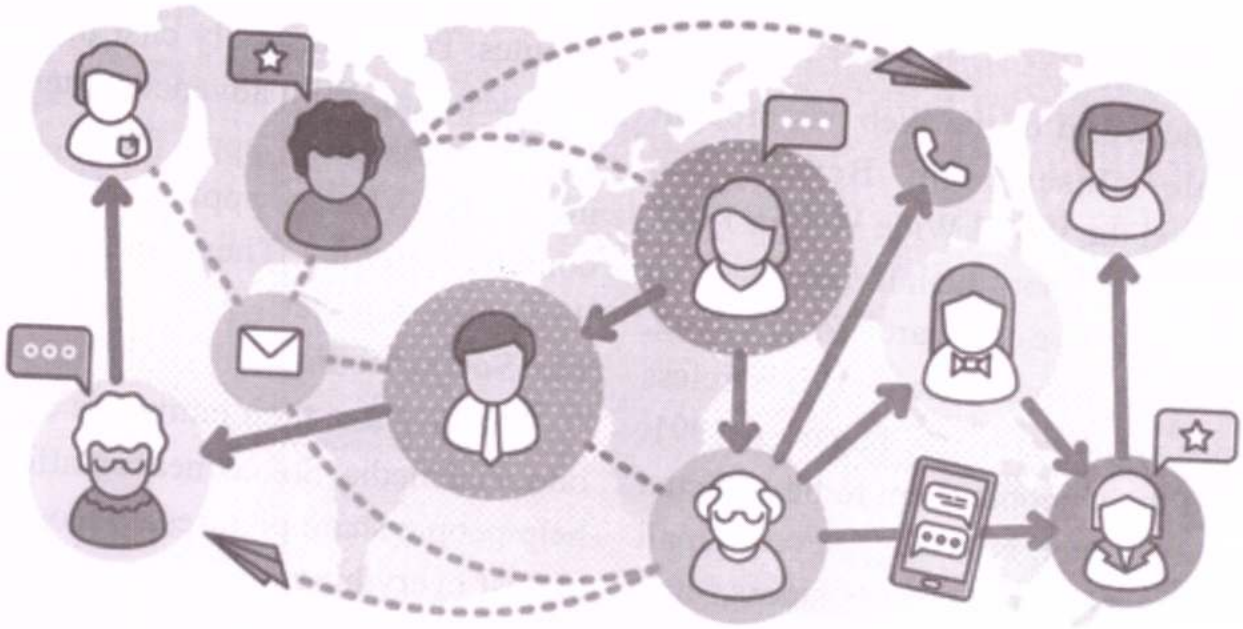

# आदर्श वाक्य

**अमिता सिंह**
बी.ए. प्रथम वर्ष

- मन पर नियन्त्रण बहुत बड़ी उपलब्धि है।
- एक छोटा सा छेद बहुत बड़े पानी के जहाज को डुबा सकता है और एक गंदी आदत आपके जीवन को तबाह और बरबाद कर सकती है।
- जिम्मेदारी ताकत देती है, इसलिए जिम्मेदार बनिए और काम करना शुरु कर दीजिए। आप पायेंगे कि सफलता आपका इंतजार कर रही है।
- जीतने की इच्छा सभी में होती है मगर जीतने के लिए प्रयास करने की इच्छा बहुत कम लोगों में होती है।
- एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते। इसलिए सोच समझकर बोलना चाहिए।
- उठो, कमर कसो। जैसा बनना है, वैसा आज से ही और अभी से हीसंकल्प करो।
- यदि किसी को सफलता दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा देर से मिलती है तो उसे यह सोचना चाहिए कि मकान बनाने से ज्यादा दिनमहल बनाने में लगते हैं।
- जिन्दगी में शान्ति से जीने के दो तरीके हैं।
- माफ कर दो उन्हें, जिन्हें आप भूल नहीं सकते और भूल जाओ उनको, जिन्हें आप माफ नहीं कर सकते।
- कुछ मिनट में जिन्दगी नहीं बदलती पर कुछ मिनट में सोचकर लिया गया फैसला पूरी जिन्दगी बदल देता है। इसलिए फैसलों को अहमियत दीजिए।
- अगर आप ऊँचा उठना चाहते हैं तो अपने अन्दर के अहंकार को निकालकर स्वयं को हल्का करो

# एक विश्वास

**अमित शर्मा**
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

एक विश्वास, जो आगे बढ़ने को कहता है।
एक विश्वास, जो हर समय कुछ करने को कहता है।
एक विश्वास, जो आसमां में उड़ने को कहता है।
एक विश्वास, जो डूबते को उबरने को कहता है।
ढूँढो उस विश्वास को तो तेरे हृदय में छिपकर बैठा है।
राह आसान नहीं है इस मुकाम की
फिर भी आगे पैर तो बढ़ाओ
मुश्किलें तो बहुत हैं इस राह में
एक विश्वास, जो मंजिल पाने को कहता है।
मंजिल को पहचान कर तू अपनी
उस पर तू निकल पड़ना
फिर चाहे तुझे उस तक पहुँचने को
बाधा डाले संसार, इंसान या कोई अपना
एक विश्वास, जो आगे बढ़ते रहने को कहता है।
आसान होता अगर रास्ता
तो सब इस पर ही चले जाते
सफल होते हैं वो जीवन में
जो हर मुश्किल में कदम बढ़ाते
माँ-बाप ने दिया जन्म पर
गुरुजनों ने दिया ज्ञान जो अमूल्य खजाना है
एक विश्वास, जो गुरुजनों के चरणों में
शीश झुकाने को कहता है।

# भारतीय पर्यटन उद्योग (आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन की संभावनाएँ)

डॉ. मयंक मोहन
विभागाध्यक्ष-अर्थशास्त्र

किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्त्व होता है। देश के लाखों लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त करते हैं। देश को अर्जित विदेशी पूँजी का एक बड़ा भाग पर्यटन द्वारा ही प्राप्त होता है। जो भी राष्ट्र अपने आप में पर्यटन योग्य क्षमता रखता है उसके आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की एक सशक्त भूमिका होती है। राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग के महत्व का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि किसी भी पर्यटन स्थल पर इस उद्योग में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके लगभग 80% व्यक्ति जुड़े रहते हैं। इसमें उद्योग एवं श्रम के नये-नये आयाम बनते जाते हैं जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इसी कारण इसे श्रम नियोजित उद्योग भी कहा जाता है। भारतीय पर्यटन उद्योग की अवधारणा को यदि विस्तृत रूप में विश्लेषित किया जाये तो पता चलता है कि यह देश का ऐसा उद्योग है जिस पर देश के लाखों परिवारों की आजीविका निर्भर है। एक मात्र यह ही उद्योग ऐसा है जो कि अन्य राष्ट्रों के लोगों को हमारी सभ्यता, संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य, अखण्डता तथा अनेकता में एकता के दर्शन कराता है। भारतीय पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के स्रोतों का एक प्रमुख साधन है तथा विदेशी मुद्रा को एकत्रित करने में सहायक है। यदि वास्तव में देखा जाये तो यहाँ की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की लोचपूर्ण व्यवस्था को नियन्त्रित करने में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व होता है।

यदि भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का आकलन किया जाये तो ज्ञात होता है कि सन् 1980 के पश्चात् यहाँ पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। इसके मुख्य कारणों में यहाँ स्थित समुद्री सुहावना तटीय भाग, सांस्कृतिक विरासत, हस्त शिल्प सामग्री, धार्मिक स्थल, योग, आयुर्वेद, सदाबहार वन, प्राकृतिक स्वास्थ्यप्रद वातावरण तथा शीतल ग्लेशियर इत्यादि तो हैं ही; साथ ही भारतीय सरकार द्वारा इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिये उठाये जाने वाले कदमों ने भी पर्यटन उद्योग को प्रमुख उद्योगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का आकलन इन्हीं उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिमालय क्षेत्र, जहाँ कभी सन्नाटा पसरा रहता था वर्तमान में वहाँ पर्यटकों के दृष्टिगत बड़े-बड़े भवनों के निर्माण, सुविधाओं की व्यवस्था, सुरक्षा के प्रबन्ध आदि होने के कारण यह क्षेत्र अब जीवन्त हो उठा है। इसी प्रकार कश्मीर की घाटी जहाँ सर्दियोंमें बर्फ गिरने के कारण कभी वहाँ के निवासी अपना आवास छोड़कर नीचे आ जाते थे, आज वहाँ देशी व विदेशी पर्यटक स्कीइंग के लिये जाते हैं जिस कारण वहाँ के स्थानीय

निवासियों के साथ-साथ पर्यटन उद्योग से जुड़े अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार मिलता है तथा आर्थिक लाभ की प्राप्ति भी होती है। जल-क्रीड़ा को पसन्द करने वाले पर्यटकों का ध्यान रखते हुये आज सरकार ने कई स्थानों, जैसे- लखनऊ, चिलका झील, नागार्जुनी सागर, विजयवाड़ा, पाण्डीचेरी, लक्षद्वीप इत्यादि में जल क्रीड़ा केन्द्र खोल दिये हैं जो पर्यटन उद्योग की आय का मुख्य स्रोत बन गये हैं। वर्तमान समय में पर्वतारोहण करना, हाथी पर बैठकर खुले जंगल की सैर करना अथवा विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाओं और लोक संस्कृति की जानकारी लेना आदि पर्यटन उद्योग के विकास के कारण ही सम्भव हो सका है।

उपरोक्त के अतिरिक्त छोटे-छोटे पर्यटन केन्द्रों पर केन्द्र अथवा राज्य सरकारों ने टूरिस्ट कार्यालय खोल रखे हैं। प्रत्येक राज्य के केन्द्रों में बड़े शहरों तथा विकसित स्थलों पर भी ये कार्यालय स्थापित किये गये हैं। इन कार्यालयों में यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें, विवरण विश्रामगृह इत्यादि उपलब्ध होने के साथ-साथ यहाँ के कर्मचारी भी पर्यटकों को सहयोग प्रदान करते हैं।

पर्यटन उद्योग एक वृहद उद्योग है। इसे संचालित करने में प्रत्यक्ष रूप से भले ही कुछ ही व्यक्ति दिखायी देते हों परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से न केवल पर्यटन स्थल के समीप के लोग अपितु अन्य क्षेत्रों के लोगों का भी इसमें अतुलनीय योगदान होता है जो कि इसी उद्योग में लग कर अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे हैं।

पर्यटन उद्योग एक सेवा क्रिया भी है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के श्रम का लाभ शासन द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को प्राप्त होता है तथा इसी उद्योग में दूसरे प्रकार लोग भी समाहित होते हैं जो स्वेच्छा से अपनी आय के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए इसमें अपना योगदान करते हैं। इससे स्पष्ट है कि दो प्रकार के श्रम इसमें लगे होते हैं- एक जो किसी नियोक्ता अथवा उन बड़े उद्यमियों के अधीन कार्यरत् हैं जो कि पर्यटन उद्योग में लगे हैं तथा दूसरा वह श्रम जो कि एकांगी अपनी जीविका के उपार्जनार्थ पर्यटन उद्योग में जुटा होता है और इसकी प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पर्यटन कार्यालय होटल, पर्यटन एजेन्सी, गाइड, परिवहन के विभिन्न साधन, दुकानदार, बीमा कम्पनियाँ, सुरक्षा कम्पनियाँ इत्यादि संस्थानों में कार्यरत् लाखों लोग पर्यटन उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

## भारतीय पर्यटन उद्योग में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का विश्लेषण

भारतीय पर्यटन उद्योग में व्यक्तियों को सर्वाधिक रोजगार विक्रय कार्य एवं भोजनालय व्यवसाय में प्राप्त है। इन दोनों व्यवसायों में इस क्षेत्र से जुड़े कुल व्यक्तियों में से 51.83% व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। इसके विपरीत पर्यटन एजेन्सी, यात्रा एजेण्टस, सुरक्षा कार्य तथा अन्य कार्यों में मात्र 10.00% व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। शेष 38.17% व्यक्ति पर्यटन गाइड, होटल उद्योग, परिवहन उद्योग, हस्तशिल्प उद्योग तथा प्रचार एवं प्रसार उद्योग में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पर्यटन उद्योग से अर्जित धन कई उद्योगों से अर्जित उद्योगों के समूहों का संगठन होने

के कारण एक हाथ में न पहुँचकर कई हाथों में पहुँचता है। इसके एक हाथ में आय का संचयन नहीं हो पाता। राष्ट्र के विभिन्न घटकों में पहुँचने के कारण यह राष्ट्र के विकास में सहायक बनता है। पर्यटक एक स्थान का कमाया पैसा दूसरे स्थान पर खर्च करता है तथा जितने लोगों को यह मिलता है उनकी आय बढ़ती है तथा उनका जीवन-स्तर भी ऊपर उठता है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के सामाजिक वितरण का एक अत्यन्त प्रभावपूर्ण माध्यम है।

भारतीय पर्यटन उद्योग से जुड़े मानव संसाधन को निम्न-स्तरीय कार्यदशाओं जैसे; कार्य के घण्टे, अशुद्ध हवा एवं पानी, कम प्रकाश एवं अस्वस्थ वातावरण में कार्य करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त पारिश्रमिक सहित अवकाश, मातृत्व अवकाश, कार्य के बीच विश्राम अवकाश, शिक्षा सुविधा, चिकित्सा सुविधा, पदोन्नति, बीमा सुरक्षा, दुर्घटना सुरक्षा, प्रशिक्षण सुविधा, दुर्घटना क्षतिपूर्ति , रोजगार में स्थायित्व आदि सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। केवल यही नहीं नियोक्ता द्वारा शोषण, भविष्य में विकास के अवसरों का अभाव, सरकारी प्रयासों में निष्क्रियता आदि दुर्भाग्यताओं का भी दंश झेलना पड़ता है। यह कार्यदशायें इस उद्योग में कार्यरत् गैर-सरकारी असंगठित क्षेत्र के मानव संसाधनों के लिये विपरीत प्रभाव उत्पन्न करती है।

## केन्द्रीय एवं प्रदेश सरकारों की पर्यटन नीति तथा उपलब्धियाँ

पर्यटन एक ऐसा विषय था जो कि 5 दशक पूर्व तक अनियोजित कार्यक्रमों की सूची में शामिल था। भारत में पंडित जवाहर लाल नेहरु ने पर्यटन के लिये योजनाएँ तैयार करने की नींव रखी जिनमें प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर वर्तमान की 12वीं पंचवर्षीय योजना तक अनवरत् सुधार होता चला आ रहा है। अब जबकि पर्यटन एक उद्योग के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है तो इसकी विकसित करने के लिये अनेकों महत्वपूर्ण योजनाएँ तथा नीतियाँ सिर्फ पर्यटन को ध्यान में रखकर ही बनायी जाने लगी है।

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों के समवेत प्रयास से जो पर्यटन उद्योग कुछ समय पूर्व तक उपेक्षित था वर्तमान में नित नयी उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। एक ओर तो यह उद्योग देश की रोजगार क्षमता में वृद्धि करता है तथा दूसरी ओर देश की धार्मिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने का कार्य भी करता है।

भारतीय पर्यटन उद्योग वैसे तो विकास की गति पकड़ चुका है किन्तु चूँकि यह एक सेवा उद्योग भी है इसलिये केन्द्र एवं राज्य सरकारों को मिल कर इसके समुचित विकास की ओर ध्यान देना चाहिये, तभी विश्व पर्यटन परिदृश्य में भारत का व्यक्तित्व उभर कर सामने आ सकेगा।

## भारत में पर्यटन उद्योग के विकास एवं इसमें रोजगार वृद्धि के लिये सुझाव

भारत में पर्यटन उद्योग के विकास एवं इसमें रोजगार वृद्धि के लिये निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित है-

- पर्यटकों के रास्ते में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों, जैसे असुरक्षा की भावना, अज्ञानता का अनुचित

लाभ उठाने की प्रवृत्ति, गाइडों का असन्तोषजनक व्यवहार, दलाली, कमीशन आदि को दूर करना आवश्यक है।

- जो भी विदेशी पर्यटक भारत आये वह ऐसी धारणा मन में लेकर लौटे कि भारत में पर्यटन सस्ता, आरामदायक एवं आकर्षक है। इसके लिए हममें से प्रत्येक व्यक्ति को यह ख्याल रखना होगा कि पर्यटक हमारे राष्ट्रीय अतिथि हैं, अत: उनकी भावनाओं और सुख सुविधाओं का हर संभव ध्यान रखा जाना चाहिए।
- प्रदेश में पर्यटन व उद्योग के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए दीर्घकालीन पर्यटन नीति, विशिष्ट व व्यापक बजट प्रावधान तथा प्रभावोत्पादक व्यूह-रचना का निर्माण अति आवश्यक है।
- आवश्यकता इस बात की है कि यहाँ परिवहन के विभिन्न साधनों का विकास करके पर्यटन उद्योग का विस्तार कर दिया जाये।
- होटलों की कमी को देखते हुए हमें घरों में उपलब्ध अतिरिक्त कमरों के प्रयोग की योजना 'पेंइंग गेस्ट' को और अधिक आकर्षक बनाना चाहिये। अनेक राष्ट्रों में यह योजना अत्यधिक लोकप्रिय साबित हो रही है।
- होटल में आवश्यक सुविधाओं का अभाव, पर्यटन स्थलों पर व्याप्त गंदगी व दूषित वातावरण, योग्य एवं अनुभवी गाइडों का अभाव, ट्रैवल एजेन्टों अथवा गाइडों द्वारा पर्यटकों को ठगने की प्रवृत्ति, विदेशी-मुद्रा परिवर्तन में कठिनाई आदि अनेक ऐसी समस्यायें हैं जिन पर अविलम्ब चिंतन कर इनके समाधान की आवश्यकता है।
- पर्यटन स्थलों का आकर्षण उनका सौन्दर्य होता है जिसके वशीभूत होकर पर्यटक आकर्षित होते हैं। किसी भी पर्यटन स्थल के प्रति यदि पर्यटकों का आकर्षण बनाये रखना है तो समय-समय पर उसका सौन्दर्यीकरण करते रहना आवश्यक है।
- पर्यटन उद्योग में मानव संसाधन के लिये जिस प्रकार शुद्ध हवा, पानी, प्रकाश एवं स्वच्छता की कमी पायी जाती है वह मानवीय कार्यदशाओं के ऊपर एक कठोर प्रहार है। सरकार एवं नियोक्ता को चाहिये कि उद्योग में लगे व्यक्तियों के लिये ऐसा स्वच्छ एवं सुन्दर वातावरण बनायें ताकि कार्य करते समय उनका मन प्रसन्न रहे तथा उनकी कार्यक्षमता में भी वृद्धि हो।
- सरकार द्वारा गैर-सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के नियोक्ताओं से मिलकर वहाँ नियुक्त मानव संसाधनों को बीमा सुविधा मिलने का प्रबन्ध करवाने की पहल करनी चाहिये।
- दुर्घटना से बचाव के सन्दर्भ में सरकार द्वारा जो नियम बनाये जाते हैं उनका सभी उद्योगों से कड़ाई से पालन कराया जाना चाहिये तथा जो भी व्यक्ति इस कार्य में बाधक बने उसके लिये कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाना चाहिये।
- यदि भारतीय पर्यटन उद्योग को आर्थिक विकास की मुख्य धारा के साथ जोड़ना है तो निश्चित रूप से हमें उपरोक्त सुझावों को गंभीरतापूर्व अमल में लाना होगा।

# साइबर हमला : कैसे बचें?

**नवीन मित्तल**
भौतिकी एवं कम्प्यूटर विभाग

आज का भारत अत्यधिक डिजिटल हो गया है और वर्तमान में देश में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या 100 करोड़ का आँकड़ा पार करने वाली है। नयी तकनीक की शुरुआत के साथ डिजिटल भारत को और भी ज्यादा रफ्तार मिलने की उम्मीद है। लेकिन जैसे-जैसे भारत में डिजिटल कार्य में बढ़ौत्तरी हो रही है, इसके साथ ही सबसे बड़ी समस्या साइबर हमलों को लेकर है। जैसे-जैसे यूजर बेस बढ़ रहा है, साइबर हमलों की संख्या वैसे-वैसे बढ़ती जा रही है। भोले भाले ऑनलाइन यूजर्स को डिजिटल मंच पर और भी ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता है। साइबर अपराधियों ने नये-नये तरीके खोज लिये हैं। साइबर हमलों के आँकड़ें बहुत ही चौंकाने वाले हैं। वैश्विक स्तर पर देखें तो रैंसमवेयर सबसे बड़ा खतरा है। रैंसमवेयर में एशिया में चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है। सबसे ज्यादा साइबर हमला की मार क्रिप्टो करेंसी पर पड़ी है। इसमें ज्यादा मुनाफा लोगों को आकर्षित करता है और इसमें ठगी भी बहुत तेजी से बढ़ रही है। पिछले कुछ समय में भारत में इसमें निवेश करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। साइबर क्रिमिनल्स लोगों के खातों से नकद एवं क्रिप्टोकरेंसी उड़ाने के लिये नये-नये स्कैंप चलाते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी की खरीद और बिक्री ने बहुत ही लोकप्रियता हासिल कर ली है और इसी अनुपात में इससे जुड़े साइबर अपराध बढ़ते जा रहे हैं। क्योंकि ज्यादातर लोग क्रिप्टोकरेंसी की बहुत ही बारीकियों से परिचित नहीं हैं। ऐसी स्थिति में साइबर अपराधी आसानी से लोगों को अपना शिकार बना सकते हैं।

कोविड-19 ने लोगों को घर से काम करने के साथ डिजिटल दुनिया पर भरोसा करने के लिये मजबूर किया है। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन पहचान की सुरक्षा भी जरूरी हो जाती है। महामारी अभी भी जारी है, ऐसे में मजबूत क्रेडेंशियल (Strong Password) सेट की अधिक आवश्यकता है। वैसे, डिजिटल दुनिया में पहचान चोरी कोई नई बात नहीं है, लेकिन वह आपको परेशानी में डाल सकती हे। स्कैमर्स आपकी सभी व्यक्तिगत जानकारियों और तस्वीरों का उपयोग नकली ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और लिंक्डइन एकांउट बनाने के लिये कर सकते हैं।

साइबर अपराध के सबसे ज्यादा आसान शिकार बुजुर्ग समूह हो सकते हैं इसलिये इस समूह पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, क्योंकि वो डिजिटल प्लेटफार्म पर कार्य तो करते हैं, लेकिन इसकी बहुत सी बारीकियाँ उनके संज्ञान में नहीं होती हैं।

साइबर सुरक्षा के लिये सभी को निम्न बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिये:-

* किसी अंजान नाम से भेजी गई ईमेल, वैबसाइट या लिंक को खोलने से पहले उस पर लिखे गये टैक्स्ट की स्पेलिंग अवश्य चैक करें। आमतौर

पर फर्जी ई-मेल या साइट पर शब्दों की स्पेलिंग गलत लिखी होती है। वास्तविक साइट और ईमेल में इस तरह की गलतियाँ नहीं होती हैं। इससे फिशिंग हमले से बच सकते हैं।

- अगर ऑनलाइन प्लेटफार्म, इंटरनेट, मीडिया एप, डेटिंग एप पर कोई आपको एप्रोच करता है, तो सीधे दोस्त बनाने से बचें। प्रोफाइल इमेज की फोटों को गूगल रिवर्स इमेज की मदद से सर्च करें। इससे स्कैमर्स का पता आसानी से लगाया जा सकता है।
- साइबर अपराधी एनीडेस्क, टीमव्यूअर जैसे एप का लिंक भेजकर डाउनलोड करने का झाँसा देकर भी ठगी कर रहे हैं। इस तरह के किसी भी लिंक पर क्लिक करने से बचें।
- साइबर अपराधी खासतौर पर बुजुर्गों को निशाना बना रहे हैं। अनजान लोगों के साथ आधार कार्ड, ओ.टी.पी. जैसी जानकारियाँ बिल्कुल भी साझा न करें। गूगल सर्च के जरिये कस्टमर केयर का नम्बर सर्च करते समय सावधानी बरतें। कस्टमर केयर के बजाय वह नम्बर स्कैमर का हो सकता है।
- अगर आपने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रखा है तो अपने वॉलेट को सुरक्षा प्रदान करने के लिये टू फैक्टर आर्थोटिकेशन को एक्टिव रखें।
- जिस डिवाइस पर आप काम कर रहे हैं चाहे वह मोबाईल हो, लैपटॉप हो या डैस्कटॉप, सिक्योरिटी सॉफ्टवेयर/एंटी वाइरस से हमेशा अपडेट रखें और सार्वजनिक स्थलों/कार्य स्थलों के डिवाइस पर व्यक्तिगत कार्य करने से परहेज रखें। यदि आपको किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर संदेह है तो लॉगइन क्रेडेशियल तुरन्त बदल दें।

अगर स्थिति ज्यादा गंभीर होती हुई दिखायी दे तो राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) पर भी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

# खेल आखिर क्यों?

सतपाल सिंह
नैत्यिक लिपिक

"सुदृढ़ स्वास्थ्य ही वह नींव है जिसके ऊपर सुदृढ़ राष्ट्र खड़ा हो सकता है।" क्योंकि उत्तम शरीर में उत्तम मस्तिष्क और उत्तम मस्तिष्क में उत्तम आत्मा का निवास होता है। इन्हीं आत्माओं के आधार पर किसी महान् राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। शारीरिक उन्नति के बिना कोई भी उन्नति आगे नहीं बढ़ सकती है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व सिकन्दर महान् के चिकित्सक हीरोफिलिस ने कहा था कि "स्वास्थ्य के अभाव में ज्ञान कारगर नहीं होता, कला को अभिव्यक्ति नहीं मिलती, शक्ति लड़ नहीं सकती, धन बेकार हो जाता है और बुद्धिमानी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है।" इस कथन का अर्थ आज भी है और भारतीयों का प्रारंभिक उद्देश्य शारीरिक व्यायाम और खेलों द्वारा अच्छा स्वस्थ्य बनाने की रुचि जागृत करना है। इस क्षेत्र में खेल का बहुत बड़ा योगदान है। खेलना मनुष्य की मूल प्रवृत्ति तथा प्राकृतिक क्रिया है ईश्वर ने शायद मानव शरीर की संरचना इस क्रिया को ध्यान में रखकर ही की है। वरना क्या जरुरत थी 70 करोड़ वायुकोषों की व 30,000 से भी अधिक कैपीलरीस के जाल फैलाने की। क्या आवश्यकता थी हृदय को 200 बार प्रतिमिनट से भी अधिक बार धड़कने की क्षमता प्रदान करने की। खेल सामान्यत: समय व्यतीत व मनोरंजन करने का सुखद तरीका है, परंतु कुछ लोगों के लिए खेल दुस्साहस पूर्ण मनोरंजन भी है, विशेष रूप से ऐसे लोगों के लिए जो खतरों से खेलना पसंद करते हैं एवं चुनौतियों को स्वीकारने में जिन्हें आनन्द मिलता है।

खेल कोई अलग से घटित होने वाली प्रक्रिया नहीं है जो सामान्य जीवन से जुड़ी न हो। इसके लिए सामाजिक मूल्यों की अलग से स्थापना करने की भी आवश्यकता नहीं है, मानव के क्रमिक विकास-क्रम तथा सामाजिक चेतना जागरण का यह एक हिस्सा है, कई मानवीय प्रवृत्तियाँ विभिन्न प्रकार के खेलों के माध्यम से मुखरित होती है जैसे-

1. मनोगत्यात्कता का त्वरित समायोजन
2. एक जुट होकर कार्य करने की क्षमता
3. कौशल अभ्यास
4. धैय व संघर्षरत रहने की क्षमता का विकास
5. देश-प्रेम की भावना का विकास
6. भाई-चारे की भावना का विकास आदि

"खेलों के मैदान में आपको खोने को कुछ नहीं है, जो कुछ भी है पाना ही पाना है।" खेल-कूद के महत्त्व व अनिवार्यता को आप अस्वीकार नहीं कर सकते, बच्चा पैदा होते ही पालने में खेलता है और आप उससे खेलते हैं, इस आधार पर दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में खेल से जुड़ा है। कौन नहीं जानता कि खेलों के महाकुम्भ "ओलम्पिक" पदक तालिका में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने से देश को गौरव प्राप्त होता है। इस युग में अश्वमेघ

का घोड़ा नहीं छोड़ा जाता तथा लड़ाईयाँ भी कम लड़ी जाती हैं, बस चार साल बाद ओलम्पिक की लड़ाई होती है इसमें जो खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करता है उससे पूरे देश का गौरव बढ़ जाता है। रोम ओलम्पिक सन् 1960 के उद्घाटन के समय ईसाई धर्म गुरु पोप जॉन पाल ने कहा था- "खिलाड़ियों आप धन्य हैं, आप लड़ाई के मैदान को खेल के मैदान में बदल देते हैं और घृणा के बदलते प्यार बाँटते है।"

अत: खेल व क्रियायें मानव जीवन में आवश्यक भूमिका निभाते हैं। खेल में शामिल व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्वास्थता की अधिकता होती है। इसी लिए खिलाड़ी को "शांति का राजदूत" माना जाता है। विदेशी भूमि पर भारतीय ध्वज लहराने का गौरव खिलाड़ी को ही प्राप्त होता है। आईये हम सभी खेल को अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण हिस्से के रूप में शामिल करें।

**Be Active Keep fit enjoy your life**
**Be passive grow fat risk your life**
**..... choice is yours**

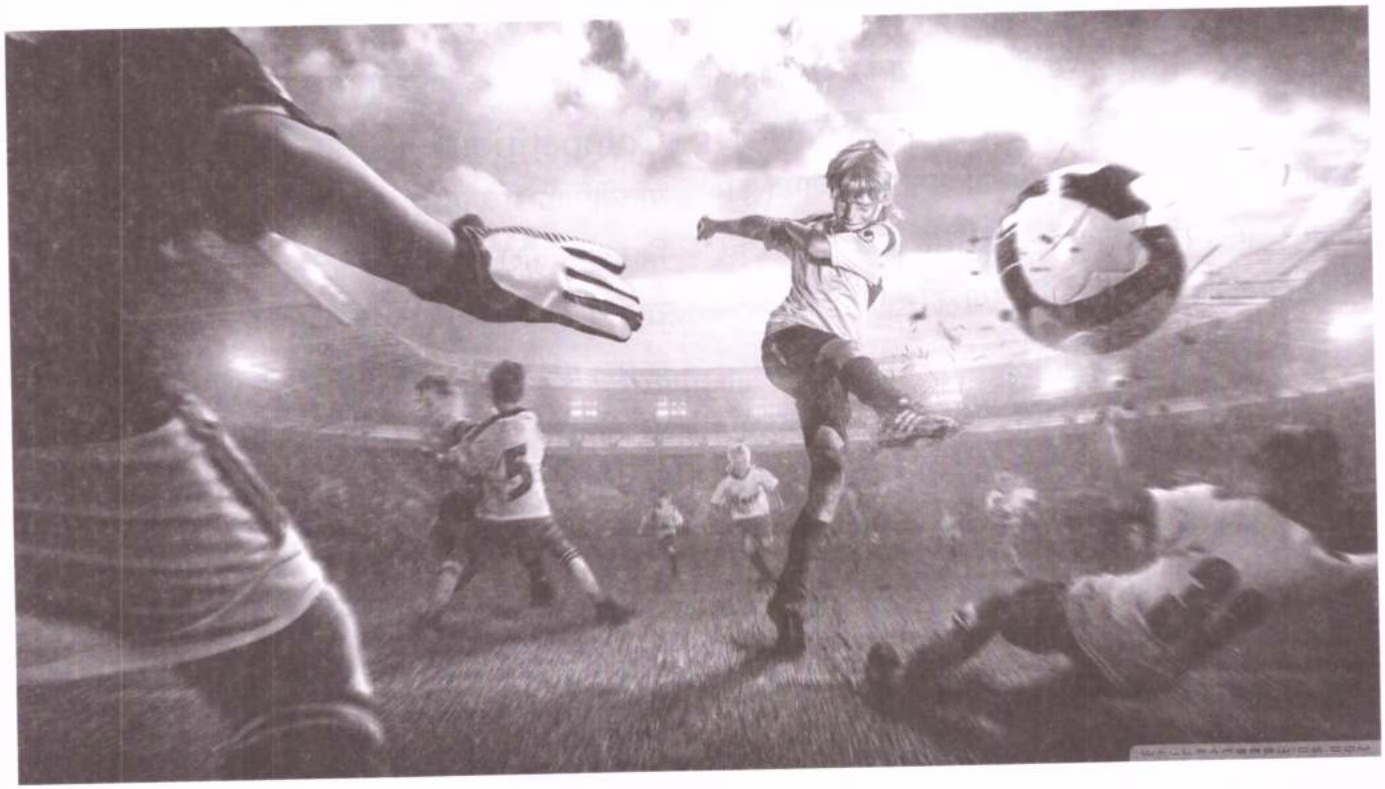

# राष्ट्रीय सेवा योजना 2021-22
# सात दिवसीय रात-दिन के विशेष शिविर का आयोजन "NSS रिपोर्ट"

हमारे महाविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की चतुर्थ इकाई सत्र 2021-22 के सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारम्भ दिनांक 09.03.2022 से प्रारम्भ हुआ जो दिनांक 15.03.2022 तक जगतपुरी पश्चिम बेगमाबाद में संचालित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बी.सी. पाण्डेय (उप प्राचार्य) द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलन कर किया गया। इस अवसर पर डॉ. हरीश कुमार, डॉ. वंदना शर्मा, डॉ. अरुण कुमार मौर्य और डॉ. श्रीकांत अतिथि के रूप में उपस्थिति थे। कार्यक्रम का संचालन श्री योगेन्द्र प्रसाद सक्सेना द्वारा किया गया। हमारे मुख्य अतिथि डॉ. बी.सी. पाण्डेय (उप प्राचार्य) का स्वागत कार्यक्रम इंचार्ज श्री योंगेद्र जी ने पुष्प देकर किया। हमारे विशिष्ट अतिथि डॉ. वंदना शर्मा का स्वागत डॉ. मनीष बालियान तथा डॉ. नीतू सिंह द्वारा पुष्प देकर किया गया। हमारे अन्य अतिथियों का स्वागत डॉ. अमर सिंह कश्यप द्वारा किया गया।

डॉ. बी.सी. पाण्डेय डॉ. हरीश कुमार, डॉ. वंदना शर्मा, डॉ. अरुण कुमार मौर्य और डॉ. श्रीकांत ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से हमारे स्वयंसेवकों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें शुभकामनायें दी। हमारे उपप्राचार्य डॉ. बी.सी. पाण्डेय ने राष्ट्रीय सेवा योजना सम्बंधित जानकारी तथा अनुभव साझा किये साथ ही साथ स्वयंसेवकों को सात दिवसीय विशेष शिविर के लिए अपनी शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम इंचार्ज श्री योगेंद्र प्रसाद सक्सेना ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किए तथा आगे के कार्यक्रम की जानकारी दी। राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम समाप्त हुआ। सभी स्वयंसेवकों ने अपनी-अपनी टोली के साथ प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग जी से आशीर्वाद तथा अनुमति लेकर अपने शिविर के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक 9 मई, 2022 को मुलतानीमल मोदी कॉलेज मोदीनगर में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' के तत्वाधान में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में मनाई गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना एवं एन.सी.सी. द्वारा एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (Quiz Competition) का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 50 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सेना कार्यक्रम इन्चार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया। डॉ. मुकेश लेफ्टिनेंट जनरल एन.सी.सी. ने राणा प्रताप के जीवन तथा वीरता पर प्रकाश डाला। इस प्रतियोगिता में प्रमोद कुमार, शिवम्, अरुण कुमार, शुभम् कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अंजू, अभिषेक, एकता सिंह, निशा शर्मा द्वितीय स्थान एवं दीपा और विशाखा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन विजेताओं को तदानुसार प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. अमर सिंह कश्यप के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया।

दिनांक 15.05.2022 को महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस, कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी. एवं रोवर्स तथा रेंजर्स द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 30 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के प्रतिमा का माल्यार्पण करके किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सेना कार्यक्रम इंचार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अरुण कुमार मौर्य ने "बदलते परिवेश में परिवारों की भूमिका एवं दायित्व" विषय पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में अतिथि डॉ. अरुण कुमार मौर्या, डॉ. दीपशिखा रोवर्स तथा रेंजर्स अधिकारी, लेफ्टिनेंट (डॉ.) मुकेश लेफ्टिनेंट एन.सी.सी., डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना तथा डॉ. नीतू सिंह कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई।

भाषण प्रतियोगिता में तुषार सिरोही तथा मुकुंद शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। मनीष कुमार राठौर, कीर्तिका सिंह, द्वितीय स्थान एवं अंजू, गुंजन सारस्वत, अरुण कुमार, हर्ष, अंशुल मेट्रोलिया तथा मैमूना ने तृतीय स्थान प्राप्त किये। इन विजेताओं को तद्नुसार प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. अमर सिंह कश्यप के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया गया।

दिनांक 21.05.2022 को महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के तत्वाधान में सड़क सुरक्षा पर आधारित शपथ कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना व रेंजर्स अधिकारी छात्र-छात्राओं के साथ मिलकर शपथ ली। इस कार्यक्रम के दौरान डॉ. दीपशिखा रेंजर्स अधिकारी, डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना तथा डॉ. नीतू सिंह कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सैना कार्यक्रम इंचार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया।

डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने सड़क सुरक्षा पर विशेष व्याख्यान दिए। अपने व्याख्यान में अमर जी ने सड़क नियमों के पालन पर विशेष जोर दिए। इस व्याख्यान द्वारा हमारे बहुत से छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हुए।

दिनांक 25.05.2022 को महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के तत्वाधान में सड़क सुरक्षा पर आधारित रैली कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र-छात्राओं के साथ मिलकर कॉलेज से राज चोपला, मोदीनगर तक रैली निकालकर सड़क यात्रियों को जागरूक किया। इस कार्यक्रम के दौरान श्री श्रीकांत गौतम, डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना तथा डॉ. नीतू सिंह कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सेना कार्यक्रम इंचार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया।

दिनांक 25.02.2022 को महाविद्यालय में आज़ादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में विश्व थायराइड दिवस, कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा "मानव स्वास्थ्य एवं थायराइड का महत्व" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 20 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण करके की गयी। इस कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सेना कार्यक्रम इंचार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्रीकांत गौतम जी ने थायराइड विषय पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के दौरान डॉ. सुषमा श्रीवास्तव, डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना तथा डॉ. नीतू सिंह कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

निबंध प्रतियोगिता में भारत गहलोत ने प्रथम स्थान, विशाल कुमार द्वितीय स्थान, लक्ष्मी हलदवानिया ने तृतीय स्थान तथा सृष्टि त्यागी ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किये। कार्यक्रम का समापन डॉ. अमर सिंह कश्यप के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया गया।

दिनांक 31.05.2022 को महाविद्यालय में आज़ादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में विश्व तंबाकू निषेध दिवस, कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना व रोवर्स तथा रेंजर्स द्वारा "पर्यावरण की रक्षा करें" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 32 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र प्रसाद सक्सेना कार्यक्रम इंचार्ज राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया। डॉ. अमर सिंह कश्यप ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाने का उद्देश्य, तंबाकू के खतरों और स्वास्थ्य पर इसके नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों के सेवन तथा इससे होने वाले दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के दौरान डॉ. गीतांजलि शर्मा, ऋचा यादव, डॉ. प्राची अग्रवाल, डॉ. राजपाल त्यागी, डॉ. अमर सिंह कश्यप कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना तथा डॉ. नीतू सिंह कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

भाषण प्रतियोगता में भारत मुकुंद शर्मा ने प्रथम स्थान, अंशल त्रित्रोलीआ द्वितीय स्थान तथा परवेज खान ने तृतीय स्थान प्राप्त किये। कार्यक्रम का समापन डॉ. दीपशिखा के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया गया।

दिनांक 05.06.2022 को मुलतानीमल मोदी कॉलेज मोदीनगर के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों द्वारा पर्यावरण क्लब गाजियाबाद के साथ मिलकर सफाई अभियान चलाया गया। यह कार्यक्रम प्राचार्य प्रदीप कुमार गर्ग के संरक्षण में कार्यक्रम इंचाई योगेंद्र प्रसाद सक्सेना के नेतृत्व में संचालित किया गया। इस सफाई अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ( परवेज खान, अरुण कुमार , अज़हरुद्दीन, कीर्ति शर्मा, मैमोना, आकाश शर्मा, वंदना शर्मा आदि) ने पर्यावरण क्लब गाजियाबाद के सदस्यों के साथ मिलकर गंगनहर मुरादनगर के आस-पास के क्षेत्र की सफाई की। इस कार्यक्रम में पर्यावरण क्लब मेरठ के इंचार्ज सावन कनौजिया भी उपस्थित रहे।

# VALUE OF KNOWLEDGE

**Sangeeta**
B.Sc. IInd

Once a king went for hunting. His ministers and soldiers were left behind. The king went out of the city and having lost his way, reached the forest. It got dark and night fell. He saw a hut in the forest. There lived a man in that hut. The king went to the man and requested him to let the king rest there for one night. Hearing this, the man became very happy. He served the king whole night. In the morning, the king said to the man; "Friend, you have helped me. Therefore, whenever you need my help, come to me". The king went away. The man was a coal seller. He would cut the wood, burn it and then he would sell it in the market. Gradually, the forest got finished. He remembered the king. He went to the king. Seeing him the king became very happy. The king asked; "Friend, how are you?" The man replied, "Your Majesty! I am in a trouble because now I do not have my job. The wood of my forest has been finished. So I have come here for your help". Hearing this the king said to the minister; "Give the most precious forest we have, to my friend". The minister said; "Your Majesty, the sandal woods are the most expensive". The king gave him the sandal woods.

After many months, one day the king went to meet the man. He thought that he would have become very rich. When the king reached there, he saw that there was the same hut. The king called the man. He came out of the house. The king said to him; "You are still poor. I thought that you would have become very rich". Hearing this, the man said; "Your Majesty, why are you joking?" "I cut the wood, burn it and then I sell the coal in the market. Doing simply this I get hardly two or three rupees. How can I become rich?" The king smiled slowly. The king gave him a piece of sandal wood and said; "Go and sell it". The man spoke, "Your Majesty even the coal does not sell, How can this wood be sold?" The king said, "Go and come after selling it." When the man went to the market with the sandal wood, the whole market smelled the aroma of the sandal wood. The crowd gathered around him. People started bidding. Someone bade for 500/- and another one for 1000/-. Seeing this, the man was surprised. He asked another coal seller; "Why the wood is fetching such a high amount?" The coal seller said; "This is a rare one and the most costly wood."

The man understood everything. He reached the king and begged his pardon for his foolishness. The king pardoned him and went back to the city.

*Thus it can be said, that everything has its own importance. But due to the lack of knowledge, we do not realise its importance.* **"Knowledge is power".**

# WHEN WE SHARE

**Neha Yadav**
B.Sc. IInd

When we share laughter,
There's twice the fun,
When we share success,
Succession of success is begun.
When we share problems,
There's half the pain,
When we share tears,
A rainbow follows rain.
When we share dreams,
They become more real,
When we share secrets,
It's our hearts we reveal.
If we share a smile,
Then our love shows,
If we share a hug,
Then our love grows.
If we share with someone,
And on him begin to depend,
Soon that person becomes
Our closest dear friend.
And what draws us closer,
And makes us all care,
Is not what we have,
But the things we share.

# DO YOU KNOW

**Meetu Nagar**
B.Sc. Ist

- Owls are the only birds that can see the colour blue.
- A goldfish has a memory span of three seconds.
- Bat always turn left when exiting a cave.
- Mosquitoes have only 47 teeth,
- An average pencil can write over thirty-five miles in a straight line.
- A pencil can write even under water.
- The world's largest amphibian is the gaint ....lamander. It can grow up to 5 ft. in length.
- The first car did not have steering wheels. The driver steered with a lever. A second full moon in a month is sometime called a "blue moon".
- The centre of the sun is like a bomb; it is always exploding.
- Every year, thousands of pieces of space rock fall into the sea.
- Two thirds of the probes sent to Mars have not completed their missions. It is called the Mars curse.
- Jupiter has 63 moons,
- Neil Armstrong's, footprints are still there on the moon. There is no wind or rain to wash it away.

# PLIGHT OF INDIAN WOMEN

**Shalini**
B.Sc. IInd

India is one of the oldest civilizations in the world with a kaleidoscopic variety and a rich cultural heritage. It has achieved multifaceted socio-economic progress during the last 60 years of its independence.

Women have had different status and positions at different times in India. She was regarded as mentally inferior to men. They remained under the strict control of their father during girlhood, of their husband during their married life and of their sons during widow-hood.

The most crucial segment of any population policy is girls, who are neglected and discriminated against in the matters of education, health and nutrition.

The dowery system has become a glaring problem. It seems to be on the increase. In fact, men become more greedy day by day. They are not confident in their own ability, but they want to become rich without working, hence demand dowery at the time of marriage.

Women are living in adverse conditions in our country. Women of the so called lower castes and tribals, have been exploited and treated as second class citizens in our society. Even in the educated sections we find that women are not treated as a person, but as a commodity. They are considered to be slaves for working at home and making man's life comfortable *It is said that there is a woman behind every successful man but who cries and cares for them.*

Women have started becoming conscious of their rights and duties. The women movement has insisted on women's voice being heard in new areas of concern, but several of these questions have to become legitimate part of the general 'political debate' in our society.

# GLOBAL WARMING

**Tarun Sharma**
*M.Com IInd Year*

1. The Rise in global temperatures due to global warming is dangerous for life on earth.
2. The unsustainable use of natural resources is also a reason for global warming.
3. The increased rate of deforestation, buring of fossil fuels, vehicles and industrial gums.
4. Research shows that the average temperature of the earth may increased by 1.0°C to 5.0°C in the next decade.
5. The rise in the global temperatures tends to melt the glaciers and raise the sea level.
6. A report suggests that the global sea level may rise by 0.3 to 2.5 metres in the next few decades.
7. Global warming brings extreme climate change and results in floods, droughts and other climate disasters.
8. A change in the global temperature affects the pattern of monsoon winds and changes the time and intensity of rain.
9. Unpredictable climate change affects the agriculture and productivity of the nation.
10. Planting more trees can be a good step towards removing the problem of global warming.

# A Fast Spreading Disease : Diabetes

**Pinki Khurana**
B.Sc. IInd

**Introduction :** Diabetes mellitus, is a common disorder of metabolism in which the amount of glucose, or sugar in the blood is too high, a condition known as hyper glycaemia.

**Causes** : Diabetes develops either because the body's pancreas is not producing enough of insulin hormone to metabolize glucose, or because insulin fails to act on receptor cells in the blood. When blood glucose rises above a certain level, it spills over into urine.

**Effects :** Moderately raised blood glucose levels can cause kidney failure, damage to vision from ruptured blood vessels in the eyes, and restricted blood flow to the limbs. Diabetes mellitus, is also associated with the risk of coronary heart disease.

**Symptoms :** A common symptom of this disease is weight reduction caused by the loss of fluids and fat, some other symptoms are passing copious amount of urine, increased thirst, disturbances of vision, itching, on genitalparts, cessation of menstruation in woman and skin infections etc. About half of the affected people are undiagnosed for sometime until high glucose levels are detected in samples of blood or urine during medical tests carried out for diagnosis of some other ailments.

**Treatment :** Although there is no cure for Diabetes mellitus, proper insulin and other therapy together with a correct diet regime enable most patients to live virtually normal life with minimum side effects. Generally insulin is self administered by patients with injection, or with automatic drug injecters attached to the body. Small pen-size injecters containing a cartridge of insulin can be carried in the pocket for ease and speed of treatment.

**Future Approaches :** Future approaches to Diabetes mellitus being explored include various insulin delivery systems to speed up body uptake, drugs that protect the pancreatic islet cells from auto immune attack, transplant of islet cells or pancreas, and artifical pancreas.

# SLEEP

**Asif Khan**
B.Com. Ist

Nobody knows why we sleep but we all need to sleep. There are no rules about how much sleep is necessary but the average adult sleeps for 7 hours 20 minutes. About 8% of adults are happy with just five hours and 4% want ten hours or more. Babies need between fourteen to eighteen hours, whereas the elderly need less than they did when they were young but often take a nap during the day.

Everyone at some time has difficulty in sleeping but if you miss a couple of hours of sleep, no harm is done. You may feel tired and irritable the next day, but the body soon makes up for the loss. 'If you try to stay awake night after night however, you soon begin to behave strangely. You lose the ability to concentrate and your judgement is impaired. You begin to imagine strange things and your behaviour becomes deranged.'

A lot of people have serious problems. Some people find they cannot get to sleep: some wake up in the middle of the night or too early in the morning. There are a number of causes. Worry and depression are the most common. All kinds of things in the environment can affect sleep like noise, light, heat, cold; new surroundings, pain and illness can also keep people awake. Most of us can accept temporary sleeplessness without seeking help but 1½ million people in Britain take drugs to help them sleep. Many people become addicted to their sleeping pills but sleeping pills do not deal with the causes of insomnia and it is better to avoid if you can. It is much better to identify the problem and remove it.

# ROLE OF PUBLIC LIBRARIES IN DISTANCE EDUCATION

**Mrs. Shalini Gupta**
Assistant Professor
Dept. of Lib. & Inf. Sci.

Distance education refers to a mode of education and a system where the interacting learner and the teacher are separated by space and time. Education in distance education is characterised by independent learning supported by self-instructional, contact-cum-counselling sessions, audio-video replays and library facilities.

Among the various types of libraries, public libraries have got a prominent role to play as they are the libraries to which every citizen has access as a matter of right. Public library system in India has left much to be desired. Public library legislation is an effective measure to establish public library system in a state. The state library authorities should be empowered to initiate joint ventures with national and state open universities to enrich the resources of public libraries and to establish a public library system in the state.

The Distance Education Council (DEC) of IGNOU being the apex body for the co-ordination and guidance of distance and open education in India can do a lot in this regard. The DEC should set up a consultative group of library and information science experts and distinguished library professionals to conduct a study and to suggest suitable steps to improve the present situation.

The following are the few suggestions in this regard:

- To set up a national network of distance education libraries and information centres catering to the academic needs of distance learners of national and state open universities.
- To explore how the distance educational institutions in India can better utilise the resources and services of the existing universities and other academic libraries.
- To initiate joint effort in collaboration with RRRLF, National Library of India(Calcutta).
- To provide finance and expertise to the state library authorities and state central libraries to enrich their resources and to modernise the services rendered by the public libraries in the state.

The major advantage of distance education is that it extends educational opportunities to those who can not gain a specialist qualification in a traditional manner. The library system caters to the on-campus teaching community as well as to learners residing in remote areas with different economics, social and educational background, library has to acquire, organise and disseminate information in the form of print as well as non-print materials

# INFORMATION ACCESS IN LIBRARIES

**Dr. Geetanjali Sharma**
Assistant Professor
Dept. of Lib. & Inf. Sci.

The present day is characterised by death of distance, death of time zone, digitized storing and manipulation, services not tied to any specific delivery system, and an increased role played by software. Libraries play an important role in the academic world by providing access to world-class information resources and services and help to stimulate research among scientists and researcher's community.

The late British Prime Minister Benjamin Disraeli once remarked: "As a general rule the most successful man in life is the man with best information". Information access refers to the means or modes through which information is made available, or to an entire range of possibilities for making information and information services available to the users. Campbell et al (1994) define information access as the "ability to quickly and easily find what you want and need in a pool of information.

Information access is not a new phenomenon and it exists through ages. Though the concept of information access remains unchanged from the tradition of oral to online, the methods and tools used to access it keep changing over the period.

Library, the treasure house of information is no exception to this transformation. The personal needs and requirements motivate a person to seek relevant information to satisfy that need. There are three methods through which an individual seek information.

- Personal Contacts
- Computer Network
- Visit to the library

The methods and process of accessing information is changing fast. It is clear that access to the information infrastructure, the ability to produce and consume are the determinants of individual's economic success and social mobility. Libraries need to understand the dynamics of service delivery to users and make sincere attempts to provide speedy access to both electronics and print resources.

# PRODUCT LIFE CYCLES

**Mr. Ashutosh Kumar Upadhyay**
(Assistant Professor)
Department of Business Administration

Product life cycles are used by management and marketing professionals to help determine advertising schedules, price points, expansion to new product markets, packaging redesigns, and more. These strategic methods of supporting a product are known as product life cycle management. They can also help determine when newer products are ready to push older ones from the market.

There are four stages in a product's life cycle - Introduction, Growth, Maturity, and Decline -but before this a product needs to go through design, research and development. Once a product is found to be feasible and potentially profitable it can be produced, promoted and sent out to the market. It is at this point that the product life cycle begins.

The various stages of a product's life cycle determine how it is marketed to consumers. Successfully introducing a product to the market should see a rise in demand and popularity, pushing older products from the market. As the new product becomes established, the marketing efforts lessen and the associated costs of marketing and production drop. As the product moves from maturity to decline, so demand wanes and the product can be removed from the market, possibly to be replaced by a newer alternative.

Managing the four stages of the life cycle can help increase profitability and maximise returns, while a failure to do so could see a product fail to meet its potential and reduce its shelf life.

Writing in the Harvard Business Review in 1965, marketing professor Theodore Levitt declared that the innovator had the most to lose as many new products fail at the introductory stage of the product life cycle. These failures

are particularly costly as they come after investment has already been made in research, development and production. Because of this, many businesses avoid genuine innovation in favour of waiting for someone else to develop a successful product before cloning it.

**Stages**

There are four stages of a product's life cycle, as follows:

**1. Market Introduction and Development**

This product life cycle stage involves developing a market strategy, usually through an investment in advertising and marketing to make consumers aware of the product and its benefits.

At this stage, sales tend to be slow as demand is created. This stage can take time to move through, depending on the complexity of the product, how new and innovative it is, how it suits customer needs and whether there is any competition in the marketplace. A new product development that is suited to customer needs is more likely to succeed, but there is plenty of evidence that products can fail at this point, meaning that stage two is never reached. For this reason, many companies prefer to follow in the footsteps of an innovative pioneer, improving an existing product and releasing their own version.

**2. Market Growth**

If a product successfully navigates through the market introduction it is ready to enter the growth stage of the life cycle. This should see growing demand promote an increase in production and the product becoming more widely available.

The steady growth of the market introduction and development stage now turns into a sharp upturn as the product takes off. At this point competitors may enter the market with their own versions of your product - either direct copies or with some improvements. Branding becomes important to maintain your

position hi the marketplace as the consumer is given a choice to go elsewhere. Product pricing and availability in the marketplace become important factors to continue driving sales in the face of increasing competition. At this point the life cycle moves to stage three; market maturity.

**3. Market Maturity**

At this point a product is established in the marketplace and so the cost of producing and marketing the existing product will decline. As the product life cycle reaches this mature stage there are the beginnings of market saturation. Many consumers will now have bought the product and competitors will be established, meaning that branding, price and product differentiation becomes even more important to maintain a market share. Retailers will not seek to promote your product as they may have done in stage one, but will instead become stockiest and order takers.

**4. Market Decline**

Eventually, as competition continues to rise, with other companies seeking to emulate your success with additional product features or lower prices, so the life cycle will go into decline. Decline can also be caused by new innovations that supersede your existing product, such as horse-drawn carriages going out of fashion as the automobile took over.

Many companies will begin to move onto different ventures as market saturation means there is no longer any profit to be gained. Of course, some companies will survive the decline and may continue to offer the product but production is likely to be on a smaller scale and prices and profit margins may become depressed. Consumers may also turn away from a product in favour of a new alternative, although this can be reversed in some instances with styles and fashions coming back into play to revive interest in an older product.

# HENRI FAVOL
# (THE FATHER OF ADMINISTRATIVE MANAGEMENT)

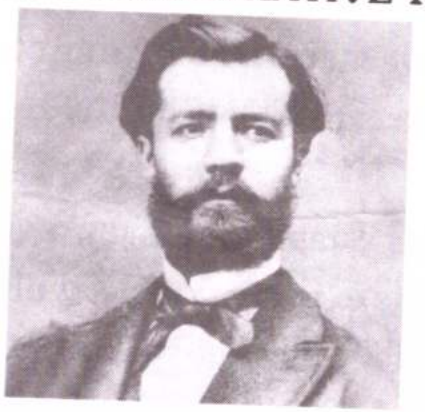

**Mr. Ashutosh Kumar Upadhyay**
*(Ass. Pro.) Dept. of Business Administration*

**Henri Fayol** (29 July 1841-19 November 1925) was a French mining engineer, mining executive, author and director of mines who developed a general theory of business administration that is often called **Fayolism.**[1] He and his colleagues developed this theory independently of **scientific management** but roughly contemporaneously. Like his contemporary **Frederick Winslow Taylor**, he is widely acknowledged as a founder of modern management methods.

Fayol was born in 1841 in a suburb of **Constantinople** (now **Istanbul**). His father, a military engineer, was appointed superintendent of works to build **Galata Bridge**, across the Golden Horn. The family returned to France in 1847, where Fayol graduated from the mining academy "**Ecole Nationale Superieure des Mines**" in **Saint-Etienne** in 1860.

That same year, aged 19, Fayol started working at the mining company named **"Compagnie de Commentary-Fourchambault-Decazeville"** in **Commentary**. in the **Auvergne** region. He was hired by **Stephane Mony**, who had decided to hire the best engineers from the Saint-Etienne Mining School, and Fayol joined the firm as an engineer and trainee manager. Mony made Fayol his protege, and Fayol succeeded him as manager of the Commentry mine and eventually as managing director of Commentry-Fourchambault and Decazeville.

During his time at the mine, he studied the causes of underground fires, how to prevent them, how to fight them, how to reclaim mining areas that had been burned, and developed a knowledge of the structure of the basin. In 1888 he was promoted to

# WHAT IS NOBEL PRIZE?

**Richa Yadav**
Assistant Professor
Department of Biotechnology

Nobel Prize is a prestigious prize awarded separately in six different fields "to those who, during the preceding year, have conferred the greatest benefit to humankind". Originally, the prize was awarded in the fields of Physics, Chemistry, Physiology or Medicine, Literature, and Peace. The Peace Prize was characterised as "to the person who has done the most or best to advance fellowship among nations, the abolition or reduction of standing armies, and the establishment and promotion of peace congresses". Later in 1968, a sixth prize was added in the field of economic sciences. The Prize is officially not a Nobel Prize but it is called as "The Sveriges Riksbank Prize in Economic Sciences in Memory of Alfred Nobel". It was established by Sveriges Riksbank (Sweden's central bank).

**How and when the Nobel Prize was established?**

Alfred Nobel, a Swedish scientist, signed his last will and testament on 27 November, 1895, giving most of his fortune to prizes in Physics, Chemistry, Physiology or Medicine, Literature and Peace.

Nobel was a Swedish chemist, engineer, and industrialist who is most famous for inventing dynamite. He was born in Stockholm, Sweden, on 21 October 1833. He was fluent in many languages and had interests in poetry and drama. It is said that he was very interested in peace-related issues and held views, which were considered radical during his time. He died in 1896. In his will, he gave most of his assets for the establishment of five prizes, which later became Nobel Prizes.

The first Nobel Prize was given on 10 December, 1901.

## Nobel Prize award money

The award winners are also given a sum of money. The award money has increased over the years and currently stands at $1.1 million per prize.

## Nobel Prize facts

The prizes have been awarded 603 times, including the Prize in Economic Sciences till February 2021. A total of 962 individuals and 28 organisations have received the award. Some have received the award more than once, which makes it 930 individuals and 25 unique organisations.

## Nobel Prize to women

A total of 57 women have been honoured with the award since 1901. The first was Marie Curie and she won the award twice, the only woman to have won it more than once.

## The Nobel Prize insignias

At the ceremony for the Nobel Prize, the Nobel Laureates receive three things - a Nobel diploma, a Nobel Medal and a document confirming the Nobel Prize amount. The medals and the diplomas are created by famous Swedish and Norwegian artists.

# PANCHAYATI RAJ - ROLE AND CONTRIBUTION OF WOMEN

**Dr. MAYANK MOHAN**
Assistant Professor, Department of Economics

India is a democratic country and the smallest unit of the democracy is Gram Panchayat. Undoubtedly this smallest unit plays its important role in running the local administration. Panchayati Raj System was started in 1959 on the recommendations of the committee constituted under the chairmanship of Sh. Balwant Rai Mehta but this system could not get success in its preliminary stage. The main reason behind this failure was that instead of giving the powers in the hands of poor and backward classes the influential and rich people of villages established their control on all the important portfolios of Panchayati Raj. In fact those people were deprived from it for whom the Panchayati Raj System was enacted. Also the women class was one of them. With the passing of time government realised the reality of the failure of the Panchayati Raj System and it decided to decentralise the powers among socially and economically backward-classes and due weightage was given also to the women. In April 1993 73$^{rd}$ and 74$^{th}$ amendments were made in the constitution and l/3$^{rd}$ seats were reserved for women. Though from the enactment of Panchayati Raj System in 1959, it had been felt that the integrated development cannot be possible, ignoring women force, yet at that time the social environment and political conditions of villages were not favourable for them due to which Panchayati Raj System reached into the hands of influential male class of the villages. These people were not mentally ready to work under the leadership of backward classes and women due to their ego and superiority complex. Besides, their was a number of problems like illiteracy of women, lack of awareness among them, their priority to fulfill their house responsibilities, lack of decision-making power, their nature to press their aspirations, dependence on their family heads etc. which created hindrances to give them proper place in Panchayati Raj System.

Now the question arises, if there is true need of contribution of women in Panchayati Raj System, how can they be empowered with their rights? In this context it is important to note that women are the foundation stone of village economy because they interact with each and every problem prevails in villages in their routine life. Though most of the village women do not know about the legal complicacies and they are also unaware of complicated rules and regulations made by the government, yet they know very well how can their family requirements be met out with limited resources and how can their day-to-day problems be solved without any difficulty. But unfortunately, the persons, who had no concern with village problems and who never faced them personally, made their complete hold on Panchayati Raj. Due to this very reason the Panchayati Raj System could not get success in its primary stage and the Central Government had to take bold steps to make a check on the dominating mentality of males. It reserved l/3$^{rd}$ seats for women in Panchayati Raj System from 1st April 1993 by making 73$^{rd}$ and 74$^{th}$ amendments in the constitution. The result of

these amendments are that in the present, about 10 lac women are working in Panchayati Raj, holding important portfolios in the system. Certainly it is a quite large number and it made a miracle change in village life. Now women of villages started to come forward to fight for their rights and they condemned the myth that women have no ability to work in the political field. Now the males of villages realised and accepted the abilities of women and they steadily begin to change their mentality about them.

Today elected women in Panchayats have become the ideal of youth girls. Now the village females can put their problems without any hitch before the elected lady chairmen or members and can get the justice against their exploitations in male dominated societies. It has been observed that these village Panchayat Chairmen are also fighting against many social evils that prevail in the society. There are a large number of females, like Fatima Bee (Andhra Pradesh), Savita Ben (Gujrat), Sudha Pate! (Gujrat) and Gudaiya Bai (Madhya Pradesh) who brought a social revolution after involving in Panchayati Raj System. They worked a lot for the village development and showed a new direction to social and economic programmes in villages. In U.P. the female candidates proved their strength winning more than 50% seats of Panchayat Chairman in the last Panchayat election. It showed their awareness, interest and struggling capacity for their rights. These elected female chairmen did a lot of work for woman and child development in the state.

Now the social status of women is improving with a revolutionary change and they are putting their side in the meetings without any fear and hesitation. They are getting the new environment in Panchayati Raj System which is proving the boon in ridding-of them from their social, economic and mental suppression in male dominated society. In fact, now the Indian women have come out of the four walls of their houses and proved their strength and ability to match their steps with males.

Before 73$^{rd}$ and 74$^{th}$ amendments in the constitution, no lady chairman was elected in Panchayat elections in Badmer district but after the enactment of this amendment in 1995, out of 380 village Panchayats, 129 (33.94%) seats of Panchayat Chairman were won by ladies and out of 4,170 Ward Panch, 1390 were ladies. It showed the positive effects of aforesaid amendments in the constitution. Like wise, first time in the history of Madhya Pradesh 1,44,735 members of scheduled cast and scheduled tribes were elected in Panchayat elections out of which 48,993 were the ladies. It occurred only after these amendments in our constitution. Further, out of 82,504 elected members of backward class, 26,735 were ladies and 61,993 ladies were from general category. Really it was the revolutionary step in the direction of ladies freedom and empowerment, which is the most necessary condition of integrated development of a country.

In the end it can be concluded by saying that during last decade ladies of Indian villages established themselves as a successful revolutionary, politicians and administrators breaking their image of house-wives only and undoubtedly it is a good beginning of revolutionary change in the society.

# Annual Report 2021-2022
## Department of Library & Information Science

**Dr. Geetanjali Sharma**
HOD

**Dr. M.Q. Ansari**
Coordinator

Department of Library And Information Science was established in its present form in the year 2002, beginning with B.Lib.I.Sc. course, under the worthy guidance of Principal, Prof. R.C. Lal.

Currently, the Department of Library and Information Science runs two professional Post graduate degree courses successfully namely, M.Lib.I.Sc. & B.Lib.I.Sc. that are affiliated to Ch. Charan Singh University, Meerut. The Department has four well qualified and dedicated teaching staff members. The guest faculties are regularly invited for delivering lectures and providing training to students.

In the current session 2021-2022, a good number of students have been enrolled. To provide excellent and modern information to the students and faculty members, the department houses a rich library with a collection of over 4500. Computing and Wi-Fi enabled internet facility is also available for the faculties as well as students.

Meritorious students were awarded with Vice Chancellor Gold Medal for getting highest marks overall and also got award of excellence by Ch. Charan Singh University, Meerut. The topper of the M.Lib.I.Sc. & B.Lib.I.Sc. in academic session 2020-21 were Ms. Tanya Bhardwaj & Ms. Stuti Mishra respectively. In academic session 2020-21 a number of students were also placed in various reputed institutions. The session 2020-21 did not organize any extracurricular activities due to COVID.

We hope and earnestly strive that in the near future, more of our students get suitable and prestigious placements & assure everyone that the course of activities in future will be implemented with high sense of dedication and discipline which will bring further glories to the college.

# Annual Report 2021-2022
## Department of Biotecnology

**Dr. Richa Yadav**
HOD

**Dr. M.Q. Ansari**
Coordinator

Department of Biotechnology was established in the year 2002, under the worthy guidance of Principal, Prof. R.C. Lal. Currently, the Department of Biotechnology runs professional Post Graduate degree course, M.Sc. Biotechnology affiliated to Ch. Charan Singh University, Meerut. The Department has well qualified and dedicated teaching staff members. The guest faculties are regularly invited for delivering lectures and providing training to students.

In the current session 2021-22, a good number of students have been enrolled. To provide excellent and modern information to the students and faculty members, the department houses a rich library with a collection of over 4500 books. Department also has a computer lab with all the modern facilities. Computing and Wi-Fi enabled internet facility is also available for the faculties as well as students.

The topper of the M.Sc. Biotechnology in academic session 2020-21 was Ms Shrishty Tyagi. She was also awarded with Vice Chancellor Gold Medal for getting highest marks overall and also got award of excellence by Ch. Charan Singh University, Meerut. In academic session 2020-21 a number of students were also placed in various reputed institutions. Various students qualified National Level Examinations. The session 2020-21 did not witness many extracurricular activities due to COVID.

We make continuous efforts to set ourselves in a dedicated manner to promote our learners and make them empowered with qualities like honesty, patience, punctuality, hard work, decision making and many more.

Before Concluding I assure everyone that the course of activities in future will be implemented with high sense of dedication and discipline which will bring further glories to the college. I am looking forward for a meaningful participation and co-operation from students and teachers in future which shall be implemented with high sense of dedication and discipline which will bring further glories to the college.

# Annual Report 2021-2022
## Department of Zoology

A four day departmental seminar was held from 19th April 2022 to 22nd April 2022. The PPT presentation and talks were assessed/evaluated by Mr. Shrikant Gautam, Asst. Prof. Department of Zoology and by two other invited Assistant professor (s) Dr. K.P. Singh (from Mihirbhoj P.G. College) and by Dr. Prakash Chaudhary (From M.M.H. College). Students gave their presentation on various recent topics like Covid-19, Zika Virus, Malaria: recent scenarios in India, Aspergillosis, Shark conservation etc. At the end of programme Dr. Sushma Srivastava, HOD gaves vote of thanks and motivated students to do their best on different platform and to earn name & fame of their own and for the college, by giving them valuable suggestions.

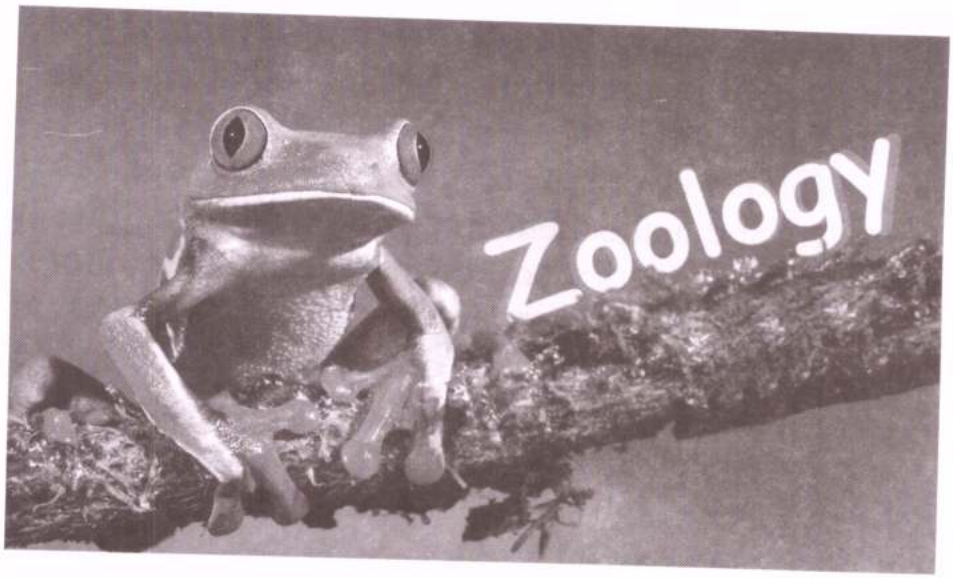

# महाविद्यालय

## नीति-संग्रह

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य ही (उनका) सबसे बड़ा शत्रु होता है। परिश्रम जैसा दूसरा (हमारा) कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता।

# ऋतम्भरा

मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर